Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 20 • 16 फरवरी - 22 फरवरी 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 14-02-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

पुण्य-पाप

साथ अवें पुन्य नें पाप,
सुख-दुख भोगवे आपोआप।

संचित पुण्य और पाप साथ चलते हैं, उनसे अपने आप सुख-दुख मिलता है।

– आचार्यश्री भिक्षु

विनय, श्रुत, तप, आचार से शान्ति को करें प्राप्त : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

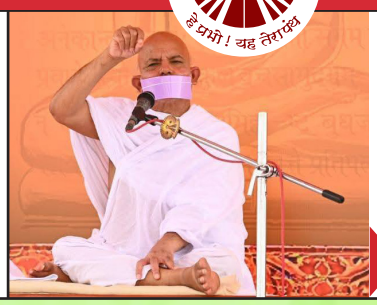

आत्मशुद्धि का साधन है सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

अहिंसा, संयम और तप की साधना करना है मंगल : आचार्यश्री महाश्रमण

योगक्षेम वर्ष हेतु जैन विश्व भारती, लाडनूं में किया भव्य प्रवेश

लाडनूं।
06 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी शुक्रवार प्रातः काल लाडनूं में ही स्थित बरड़िया परिवार के आवास भाग्य श्री भवन से गतिमान हुए। आज के बहुप्रतीक्षित दिवस पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु लाडनूं पहुँचे थे।

लाडनूं का तेरापंथ समाज ही नहीं, अपितु अन्य जैन एवं जैनत्तर समाज भी मानवता के संदेश का अभिनन्दन करने उत्सुक नजर आ रहा था। विमल विद्या विहार सहित लाडनूं के कई विद्यालयों के विद्यार्थी और श्रद्धालु बहु अगवानी हेतु पंक्तिबद्ध खड़े थे। पूज्य गुरुदेव तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी की जन्मस्थली पधारे। वहां दर्शन-वन्दन के पश्चात् शांतिदूत लाडनूं वासियों पर मंगल आशीष वृष्टि करते हुए जैन विश्व भारती की ओर

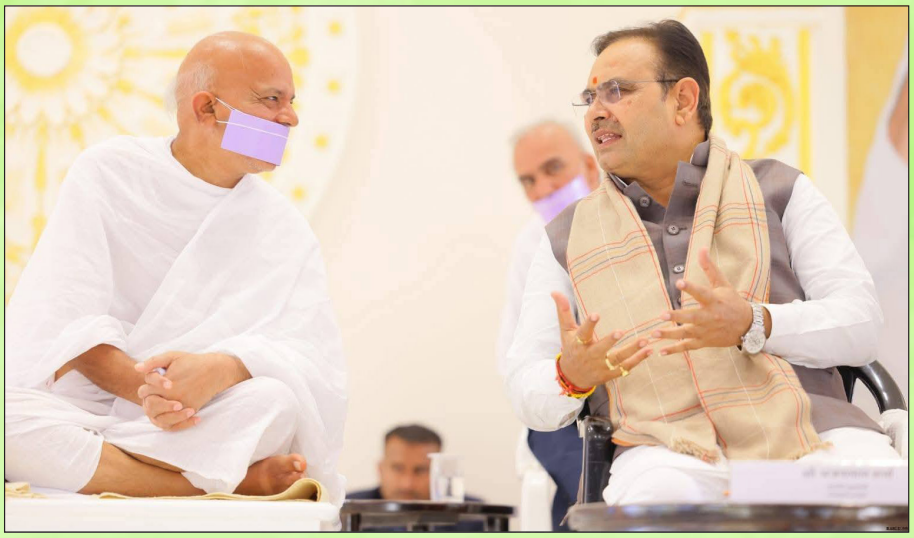

पधारे। साधु, साध्वी, समणी व मुमुक्षु वृंद कतारबद्ध थे। इनके मध्य तेरापंथ धर्मसंघ के महासूर्य योगक्षेम वर्ष के महामंगल प्रवेश के लिए गतिमान हुए तो पूरा लाडनूं नगर जयघोष से गूंज उठा। पूर्व निर्धारित शुभ मुहूर्त दस बजकर दस मिनट पर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर में बने 'महाश्रमण विहार' में योगक्षेम वर्ष के लिए नवीन रूप से महामंगल प्रवेश किया।

योगक्षेम वर्ष के लिए नवीन रूप से निर्मित सुधर्मा सभागार में अपार जन समूह उपस्थित था। इस मंगल अवसर पर आचार्य श्री की अभिवंदना में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा और राजस्थान पत्रिका के प्रधान संपादक श्री गुलाब कोठारी भी उपस्थित थे। महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ आज के मुख्य समारोह का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल लाडनूं ने मंगल स्तुति की प्रस्तुति दी। जैन विश्व भारती लाडनूं में प्रवाहित साध्वीवृंद व समणी वृंद ने संयुक्त रूप से गीत का संगान किया।

साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी ने इस अवसर पर जनता को उद्बोधित करते हुए शासन माता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी की स्मृति की और कहा कि उनके निवेदन को आचार्य श्री ने बहुमान देते हुए इस धरती पर योगक्षेम वर्ष करना स्वीकार किया। उन्होंने आचार्यश्री की अभिवंदना में अपनी अभिव्यक्ति दी। (शेष पेज 9 पर)

भव्य दीक्षा समारोह का आयोजन

धर्मसंघ की प्रभावना के लिए शारीरिक व बौद्धिक क्षमताओं का करना चाहिए उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
08 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के महासूर्य, एकादशमाधिशास्ता युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में दीक्षा समारोह जैन विश्व भारती लाडनूं में समायोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ पूज्य प्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। सर्वप्रथम मुमुक्षु चंदन ने दीक्षार्थी बहनों का परिचय प्रस्तुत किया। मुमुक्षु खुशी सुराणा ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। पारमार्थिक शिक्षण संस्थान की ओर से मोतीलाल जीरावाला ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। दीक्षार्थियों के पारिवारिक जनों ने आज्ञा पत्र गुरु चरणों में अर्पित कर अपनी अनुमति प्रदान की।

तत्पश्चात आचार्य प्रवर द्वारा दीक्षार्थियों से संक्षिप्त प्रश्नोत्तर किया गया और अंतिम रूप से पात्रता की जांच की गई। आचार्य प्रवर ने आगम वाणी

का उच्चारण कर मुमुक्षु सलोनी नखत को साध्वी दीक्षा और मुमुक्षु खुशी सुराणा को समणी दीक्षा प्रदान की। पूज्य प्रवर ने दीक्षा संस्कार के पश्चात् मुमुक्षु सलोनी नखत का आध्यात्मिक नामकरण 'साध्वी सुकृत प्रभा' तथा मुमुक्षु खुशी सुराणा का नामकरण 'समणी गीतप्रज्ञा' किया। आज के दीक्षा समारोह की मुख्य विशेषता यह रही कि मुमुक्षु सलोनी नखत की दीक्षा की घोषणा मात्र दो घंटे पूर्व ही हुई थी। दसवां अध्ययन भिक्षु के लक्षणों का बोध देने वाला है। साधु-साधियों और समणियों को यह आगम कंठस्थ रहना चाहिए साथ ही इसका पारायण भी होता रहना चाहिए। यदि रोज पूरा न हो सके तो कम से कम सप्ताह में एक बार इसका पारायण अवश्य ही कर लेना चाहिए। अभी परम पूजनीय आचार्यश्री भिक्षु का 300वां जन्म वर्ष भिक्षु चेतना वर्ष चल रहा है। दशवैकालिक के दसवें अध्ययन में भी भिक्खु-भिक्खु शब्द बार-बार आता है। हमें उस अध्ययन में बताई गई बातों को आत्मसात कर तेजस्वी संन्यास और साधना का जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। (शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 फरवरी - 22 फरवरी 2026

विनय, श्रुत, तप, आचार से शान्ति को करें प्राप्त : आचार्यश्री महाश्रमण

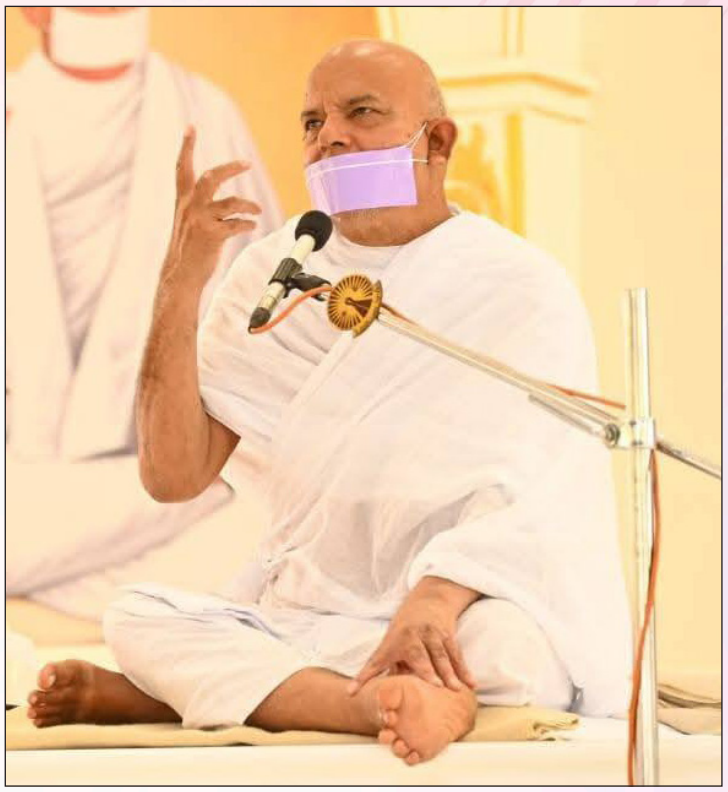

लाडनूं।
09 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरांपथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन विश्व भारती, लाडनूं के सुधर्मा सभा में आर्हत् वाङ्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि चार समाधियां बताई गई हैं - विनय समाधि, श्रुत समाधि, तप समाधि, और आचार समाधि।

ये चार चीजें ऐसी है, जिनके आसेवन से समाधि प्राप्त हो सकती है। चित में निर्मलता और शांति की संप्राप्ति हो सकती है, विकास हो सकता है।

व्यक्ति अंहकार से बचे और विनय भाव रखे तो चित में शांति, समाधि और प्रफुल्लता रह सकती है। व्यक्ति के जीवन में, भाषा में, विचार में और शारीरिक मुद्रा में घमंड नहीं आना चाहिये। घमंड का विचार करना, भाषा में अभिव्यक्त करना और शारीरिक मुद्रा में भी घमंड आना, अंहकार ही होता है। घमंड का संबंध भीतर के भावों से होता है। भीतर में जैसे भाव होते हैं तदनुसार अभिव्यक्ति होती है। हमारे भीतर जैसे भाव होते हैं वे चाहे सामने वाला व्यक्ति न जान सके परंतु गहराई से चेहरे को पढ़ने वाला व्यक्ति यह आकलन कर सकता है कि भीतर में क्या चल रहा है। भीतर के भाव बाहर शरीर के अंगों में भी प्रकट हो सकते हैं। जैसे कोई व्यक्ति भयभीत होता है तो उसके चेहरे की मुद्रा बदल जाती है। कोई व्यक्ति चिंता में, आलस्य में होता है तो उसी के अनुरूप उसके शरीर की स्थिति हो जाती है। इसी प्रकार स्नेह अथवा आक्रोश के भाव चेहरे पर अथवा आंखों से दिखाई दे सकते हैं। बाहर के अंगों में भीतर की मनःस्थिति प्रकट हो जाती है। जो साधु अथवा व्यक्ति अंहकार को दूर रखे और मार्दव भाव का अभ्यास रखे, विनय भाव रखे उसके चित में शांति रह सकती है। अविनय, अंहकार का भाव और उसके अनुरूप ही आचार हो तो व्यक्ति दुःखी बन सकता है। अविनीत को विपत्ति और विनीत को संपत्ति मिलती है अतः विनय समाधि प्राप्ति करने का उपाय हो।

दूसरी समाधि है श्रुत समाधि। हमारी परंपरा में बतीस आगम मान्य है अतः जितना संभव हो सके आगम स्वाध्याय करने का प्रयास करें। चितारणा करें और साथ में अर्थ का भी बोध करें।

स्वाध्याय से चित्त में शांति और वैराग्य भाव की परिपृष्टि हो सकती है। स्वाध्याय करने से ज्ञान बढ़ता है और मन स्वाध्याय में लग जाने से मन की एकाग्रता भी बढ़ सकती है।

ज्ञान और एकाग्रता से हम संमार्ग में अपने आपको नियोजित कर सकते हैं और उपदेश से दूसरों को भी धर्म के मार्ग में स्थापित कर सकते हैं। अतः श्रुत भी एक समाधि का कारण है।

तीसरी है तप समाधि। तप करने से भी समाधि मिल सकते है। जिनके शारीरिक अनुकूलता हो उन्हें तपस्या करनी चाहिए। सेवा करने से भी समाधि मिल सकती है। चौथी है आचार समाधि। व्यक्ति के आचार में जागरूकता रखने से भी समाधि मिलती है। साधु पांच महाव्रत पांच समिति और तीन गुप्तियों के सम्यक् पालन में जागरूक रहे। इस प्रकार व्यक्ति अपनी समाधि को अपने हाथ में रखने का प्रयास करे तो बहुत बात हो सकती है। इस प्रकार विनय, श्रुत, तप और आचार - इन समाधियों की साधना से चेतना निर्मलता को प्राप्त कर सकती है। साधु-साध्वियों की अभिव्यक्ति के क्रम में साध्वी कल्पलताजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। पूज्य गुरुदेव ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

मुनि विजयकुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी और सहयोगी संतों के साथ गीत का संगान किया। मुनि गौरवकुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। पूज्य प्रवर ने सबको मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मुमुक्षु बहिनों ने गीत का संगान किया।

साध्वी कार्तिकयशाजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी और आचार्य प्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

संयम, तप, और साधना से भव सागर को पार करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलपुरा।
04 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, शांति दूत आचार्यश्री महाश्रमणजी बुधवार प्रातः काल अपनी धवल सेना के साथ गतिमान हुए और लगभग तेरह किमी. का विहार सम्पन्न कर मंगलपुरा में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। इससे पूर्व मार्ग में बहिर्विहार से पधारे मुनि कमलकुमारजी व मुनि जयकुमारजी आदि संतों ने आचार्यश्री के दर्शन किए, वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

विद्यालय परिसर में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित जनता को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि हमारे जीवन में दो तत्त्व हैं - आत्मा और शरीर। दोनों की प्रकृति भिन्न-भिन्न है। आत्मा जहां चैतन्य स्वरूप है वहीं शरीर अजीव है, जड़ है। शरीर और आत्मा का मिला हुआ रूप हमारा जीवन होता है। कोरी आत्मा है, तो वहां शरीर, वाणी, मन वाला जीवन नहीं हो सकता। जहां शरीर नहीं है वहां श्वासोच्छ्वास भी नहीं हो सकता। जहां कोरा शरीर है, आत्मा नहीं है वहां भी जीवन नहीं हो सकता। यह सामान्य बात है कि जीवन वहां होता है जहां शरीर और आत्मा दोनों मिश्रित होते हैं। जहां आत्मा शरीर से निकल गई, वह मृत्यु हो जाती है और जहां हमेशा के लिए शरीर छूट जाता है वह मोक्ष हो जाता है।

शास्त्र में कहा गया कि शरीर एक नौका है। संसार रूपी समुद्र को पार करने के लिए इस शरीर का नौका के रूप में उपयोग किया जा सकता है। नौका निश्छिद्ध होनी चाहिए क्योंकि छेद वाली नौका डुबोने का काम कर सकती है। शरीर रूपी नौका में आश्रव छेद के समान हैं, जिनमें से कर्म पुद्गलों का आगमन होता है। यह शरीर अथवा जीवन रूपी नौका है, जीव नाविक है और संसार अर्णव-समुद्र है, जिसे महर्षि तर जाते हैं। शरीर के द्वारा संयम व तप की साधना की जाए तो यह तारने वाली नौका है परन्तु यदि शरीर के द्वारा पाप किए जाते हैं तो यह नौका डुबोने वाली भी हो सकती है। हमारा यह मानव जीवन बीत रहा है अतः शरीर जब तक स्वस्थ रहे, सक्षम रहे, जब तक बुढापा हावी न हो जाए तथा व्याधि शरीर में न बढ़े, इन्द्रिया कमजोर न हो तब तक धर्म का समाचरण करना चाहिए। संयम, तप, और साधना के माध्यम से भव सागर को पार करने का प्रयास करना चाहिए। पूज्य प्रवर ने आगे कहा कि अब जैन विश्वभारती लाडनूं निकट है। परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी लाडनूं में कितने विराजे और वहां कितने चातुर्मास किए। लाडनूं में लम्बा प्रवास निर्धारित है। साधु-साध्वियों भी वहां पहुंच रहे हैं। आज मुनिश्री कमलकुमारजी स्वामी, मुनिश्री श्रेयांसकुमारजी स्वामी ठाणा 4 गंगाशहर में चातुर्मास व लम्बा प्रवास करके पधारे हैं। उधर मुनि जयकुमारजी भी दो संत पधार गए हैं। खूब अच्छी धर्म प्रभावना होती रहे।

मुनि श्रेयांसकुमारजी ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति देते हुए गीत का संगान किया। मुनि कमलकुमार जी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए सहवर्ती संतों के साथ गीत की प्रस्तुति दी। मुनि जयकुमार जी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

चिकित्सा सेवा कार्यों में सहभागी सदस्यों का सम्मान समारोह

गंगाशहर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर ने आज शान्तिनिकेतन सेवा केन्द्र में विराजित चरित्र आत्माओं की चिकित्सा सेवा कार्यो में जुड़े हुए व्यक्तियों का सम्मान समारोह सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ में दीक्षित होने से व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन के प्रति निश्चित हो जाता है। आचार्य श्री भिक्षु ने ऐसी व्यवस्था बनाई है सभी कार्य व्यवस्थित रूप से हो जाते हैं। तेरापंथ संघ का एक अनोखी विशेषता है कि संघ के सभी सदस्य आश्वस्त है कि वृद्धावस्था, बीमारी, अथवा अन्य कोई दुर्घटना की स्थिति में उनकी अच्छी से अच्छी सेवा सुश्रूषा होगी।

इस प्रकार संघ का प्रत्येक सदस्य अपने आप में निश्चित है कि उसके अन्य सहयोगी संत उसकी सर्वोत्तम सेवा करेंगे। आचार्य श्री पूरा ध्यान रखते हैं। किसी साधु साध्वियों को किसी भी परिस्थिति में असहाय होने का कोई भय नहीं है। आज तेरापंथ धर्म संघ में अवस्था प्राप्त, रूग्ण, किसी भी प्रकार की शारिरिक विवशता की वजह से साधु साध्वियों के लिए सेवा केन्द्रों कि व्यवस्था की हुई है। जिसमें उनकी सेवा की जाती है। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सेवा केन्द्रों को तेरापंथ धर्मसंघ के तीर्थ स्थल के रूप में पहचान प्रदान की है। परिवार में सेवा भावना के संस्कार आते है। जिससे आम जन में सेवा भावना बढ़ती है जो भविष्य में परिवारों में बुढ़ापे में सेवा को सुरक्षित बनाते है। साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य श्री भिक्षु ने कहा कि जो साधु रोगी, वृद्ध और ग्लान साधुओं की सेवा नही करता, वह भगवान् की आज्ञा का उल्लंखन करता है। उसके मोहनीय कर्म का बंधन होता है। उसके इह लोक ओर परलोक दोनों बिगड़ जाते है।तेरापंथ धर्म संघ में प्रत्येक साधु साध्वियों को तीन चाकरी तीन साल तक सेवा करना अनिवार्य है। सेवा का पुरा विधान है। यह अद्वितीय सेवा व्यवस्था की संकल्पना आचार्य भिक्षु की एक महान देन है। वर्तमान समाज व्यवस्था के संदर्भ में यह चिंतन का विषय है की किस प्रकार समाज में सेवा के ऐसे कार्य को स्थापित किया जा सकता है। आज तेरापंथ सभा गंगा शहर में जो सेवा करने वाले ग्रहस्थ लोगों का सम्मान किया है । यह भी एक प्रेरणादायी कार्य है ।

कार्यक्रम में अमर चन्द सोनी अपने विचार व्यक्त किये। चिकित्सा सेवा प्रभारी निर्मल तातेड़ ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री जतनलाल संचेती ने किया।

सीपीएस कार्यशाला का आयोजन

उधना।

तेयुप उधना द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में सीपीएस फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्-उधना द्वारा सात दिवसीय कॉंफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन 19 से 25 जनवरी 2026 तक किया गया।

तेयुप उधना के अध्यक्ष कमलेश बाफना की अध्यक्षता में कॉंफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह 25 जनवरी दोपहर 3:30 बजे से तेरापंथ सभा भवन उधना में भव्य आगाज हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में तेरापंथ टाइम्स के संपादक जयेश मेहता एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा उधना के अध्यक्ष निर्मल चपलोत की उपस्थिथि रही। तेरापंथ युवक परिषद उधना के निवर्तमान अध्यक्ष गौतम आंचलिया ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सीपीएस नेशनल प्रशिक्षक के रूप में सूरत से भव्य बोथरा हमारे बीच थे। कार्यक्रम की शुभ शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई, विजय गीत का संगान तेयुप उधना एवं किशोर मंडल उधना के सदस्यों द्वारा दिया गया एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन मुख्य अतिथि जयेश मेहता ने किया। तेयुप उधना के अध्यक्ष कमलेश बाफना ने सभी अतिथि, संभागी एवं श्रावक समाज का हार्दिक स्वागत किया।

दीक्षांत समारोह में संभागी के रूप में कुल 32 संभागियो ने विभिन्न-विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। संभागियों के परिजनों ने भी उत्साहवर्धन हेतु अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सात दिवसीय इस कार्यशाला में ट्रेनर के रूप में नवीन बच्छावत, दिव्यांश जैन, एवं भव्य बोथरा का मुख्य सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यशाला को सफल बनाने में संयोजक ऋषभ मांडोत, भाविन संचेती, स्मित चोरड़िया, अमित बडोला एवं पूरी तेयुप की टीम का विशेष श्रम रहा।

इस सात दिन के प्रशिक्षण में लोगों ने आत्मविश्वास के साथ मंच पर प्रस्तुति देना सीखा और इसमें सकल जैन समाज के लोगो की भागीदारी रही। कार्यक्रम के सभी संभागी और उनके परिवार जन ने खूब-खूब अनुमोदना की तथा भविष्य में भी ऐसे आयोजन करते रहने की परिषद परिवार से विनम्र प्रार्थना की। संभागियों को अंत में सम्मानित किया गया। आभार तेयुप उधना के मंत्री अनिल सिंघवी ने किया।

बैलेंसिंग योर सेल्फ कार्यशाला का आयोजन

होसकोटे।

साध्वी संयमलतजी जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य के सान्निध्य में बैलेंसिंग योर सेल्फ कार्यशाला का विशेष आयोजन किया गया।

मुख्य प्रशिक्षक डालमचंद सेठिया व सह प्रशिक्षक पूजा गूगलिया के विशेष प्रयोग एवं वक्तव्य हुए। साध्वी संयमलताजी नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम को प्रारंभ करते हुए कहा आज के युग में तनाव एक लाइफ लॉंग बीमारी बन गया है प्रत्येक व्यक्ति का मन मस्तिष्क तनावग्रस्त है नींद की गोलियाँ खाकर भी वह गहरी नींद नहीं ले पा रहा हैं। इसको रोकने की महत्वपूर्ण पद्धति है प्रेक्षाध्यान यह एक वैज्ञानिक पद्धति है व्यक्तिगत जीवन में छोटे छोटे ध्यान के प्रयोग हमारे शारीरिक मानसिक भावनात्मक स्वास्थ्य को मजबूत बनाते हैं और स्वयं को बैलेंसिंग बनाते हैं।

शारीरिक तौर पर बीपी, डायबिटीज़ आदि बीमारियाँ भी ध्यान से नियंत्रित में आ जाती हैं जीवनी शक्ति को बढ़ाने वाली मानसिक और भावनात्मक तनावों से निजात दिलाने वाली प्रेक्षा ध्यान पद्धत आज के युग में संजीवनी बूटी का काम कर रही है।

इसके साथ आत्मा साक्षात्कार तक पहुँचने वाली है। डालमचंद सेठिया ने कहा ध्यान के द्वारा वर्तमान क्षण में मुक्ति का अनुभव किया जा सकता है अनेक छोटी छोटी दैनिक समस्याओं का समाधान खुद से पाया जा सकता है।

पूजा गूगलिया ने कायोत्सर्ग का महत्व श्वास प्रेक्षा एवं ध्यान के प्रयोग करवाए कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए साध्वी मार्दव श्रीजी ने कहा जीवन का आनंद कहीं बाहर नहीं बल्कि मनुष्य के अपने ही भीतर है उसे ढूंढने के लिए स्वयं को संतुलित बनाना जरूरी है अपनी पर्सनल लाइफ, सोशल लाइफ, रिलेशन को अच्छा रिलेशन रखने के लिए ध्यान के प्रयोग जरूरी है अंतः हम जागरूकता के साथ जीवन जिए।

आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर का हुआ भव्य उद्घाटन

गंगाशहर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF), बीकानेर द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर (AMKC) का भव्य उद्घाटन गंगाशहर के चोरडिया चौक स्थित केंद्र परिसर में अत्यंत गरिमामय एवं प्रेरणादायी वातावरण में समाजसेवी गणेश बोथरा एवं महावीर रांका द्वारा किया गया। समारोह को पावन सान्निध्य प्रदान करते हुए मुनि अमृत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि "ज्ञान की शक्ति सबसे महत्वपूर्ण शक्ति है।

युवाओं का विकास और उनके भीतर नेतृत्व क्षमता का निर्माण राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य है।" उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ जी के दूरदर्शी चिंतन का उल्लेख करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता और आधुनिक ज्ञान का समन्वय ही समाज को सही दिशा प्रदान कर सकता है। मुनिश्री जी ने कहा कि AMKC ज्ञान-विकास का सशक्त माध्यम बनकर गंगाशहर एवं संपूर्ण अंचल के युवाओं को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करेगा तथा TPF द्वारा किए जा रहे आध्यात्मिक एवं शैक्षणिक प्रयासों की भी प्रशंसा की। TPF राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने अपने वक्तव्य में AMKC के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए कहा कि तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम ने देशभर के प्रोफेशनल्स को एक ऐसे मंच पर जोड़ा है, जहाँ आध्यात्मिकता का भी सशक्त जुड़ाव है। वर्तमान में फोरम के 11,000 से अधिक सदस्य समाज और संघ के लिए निरंतर सेवा कर रहे हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि गंगाशहर स्थित AMKC भविष्य में वर्ल्ड क्लास CA कोचिंग सेंटर के साथ-साथ IAS-IPS जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का भी केंद्र बनेगा। इस अवसर पर बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन समाज का बीकानेर के विकास में विशेष योगदान रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर भविष्य में बीकानेर के विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होगा।

सीए सोहनलाल बैद ने अपने प्रेरणा दायी विचार व्यक्त करते हुए AMKC में प्रस्तावित गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान में अनेक विद्यार्थी कोचिंग के लिए जयपुर, जोधपुर एवं अहमदाबाद जैसे शहरों में जाकर दूर रहकर लाखों रुपये खर्च करते हैं। यदि वही सुविधाएँ स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराई जाती हैं, तो यह समाज के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होगा। कार्यक्रम के अंत में TPF महामंत्री श्री मनीष कोठारी द्वारा आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उद्घाटन विधि का संपादन जैन संस्कार विधि से किया गया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 फरवरी - 22 फरवरी 2026

संक्षिप्त खबर

यूपीएससी के सबसे युवा सलाहकार नियुक्त

अहमदाबाद। भारत सरकार के संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने देश के जाने-माने जनस्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. महावीर गोलेच्छा को अपना सलाहकार नियुक्त किया है। इस नियुक्ति के साथ ही डॉ. गोलेच्छा यूपीएससी के सबसे युवा सलाहकार बन गए हैं। डॉ. महावीर गोलेच्छा वर्तमान में भारतीय जनस्वास्थ्य संस्थान, गांधीनगर (आईआईपीएचजी) में स्वास्थ्य नीति, प्रबंधन एवं व्यवहार विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। यूपीएससी द्वारा उन्हें विभिन्न केंद्रीय सेवाओं हेतु आयोजित साक्षात्कारों, परीक्षाओं एवं चयन प्रक्रियाओं में योग्य अभ्यर्थियों के चयन हेतु परामर्शदायी भूमिका सौंपी गई है। डॉ.गोलेच्छा देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य नीति विशेषज्ञ हैं। उन्हें स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की "विश्व के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों" की सूची में स्थान मिल चुका है। स्वास्थ्य नीति निर्धारण, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत सहित विभिन्न जनस्वास्थ्य कार्यक्रमों में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। उनकी इस नियुक्ति से यूपीएससी को युवा दृष्टिकोण एवं नवीन सोच का लाभ मिलेगा, वहीं यह उपलब्धि देश के युवाओं के लिए भी प्रेरणास्रोत मानी जा रही है।

कलेक्ट एंड डोनेट सेवा कार्यक्रम का आयोजन

श्रीडूंगरगढ़। नववर्ष की शुभ शुरुआत सेवा भाव के साथ करते हुए तेरापंथ युवक परिषद् एवं किशोर मंडल के संयुक्त तत्वावधान में श्रीडूंगरगढ़ में एक विशेष "कलेक्ट एंड डोनेट" सेवा कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। परिषद् अध्यक्ष विक्रम मालू ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम से पूर्व विभिन्न क्षेत्रों का सर्वे कर यह सुनिश्चित किया गया कि सेवा वास्तविक आवश्यकता वाले स्थानों तक प्रभावी रूप से पहुंच सके। इसी सुविचारित योजना एवं टीमवर्क के साथ यह सेवा अभियान सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के कलैक्शन के दौरान तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मंडोत एवं उनकी पूरी टीम ने इस सेवा कार्य की सराहना करते हुए परिषद् के प्रयासों को अनुकरणीय बताया।

निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर टेस्ट कैंप का आयोजन

यशवंतपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल यशवंतपुर के तत्वावधान में निःशुल्क कैंसर कैंप का आयोजन हुआ । इसका उद्घाटन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की सहमंत्री मधु कटारिया, मुख्य अतिथि बी जे पी मल्लेश्वरम वार्ड अध्यक्ष गौतम मुथा, परिषद अध्यक्ष धर्मेश डूंगरवाल,द्वारा हुआ। अध्यक्ष रेखा पितलिया ने सभी का स्वागत किया। मधु कटारिया ने कहा पूरे भारत वर्ष मे एक समय पर एक साथ कैंसर कैंप का आयोजन हो रहा है। डॉ तृप्ति कुलकर्णी ने कहा इस बीमारी को हरा सकते हैं। मंडल द्वारा होस्पिटल के सहयोग हेतु सर्टिफिकेट व सम्मान दिया गया। मंत्री टीना पितलिया ने आभार व्यक्त किया। प्रथम चरण मे लगभग 100 बहिनो का परिक्षण हुआ।

ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन

श्रीडूंगरगढ़। आध्यात्मिक वातावरण के साथ ऐतिहासिक रूप से ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन संपन्न हुआ। इस अनूठी प्रतियोगिता में कुल 11 टीमों ने भाग लिया और 10 राउंड में अपने टीम वर्क, आध्यात्मिक ज्ञान, सूझ-बूझ एवं विवेक के माध्यम से विभिन्न स्तरों को पार करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। साध्वी संगीतश्री जी एवं साध्वी डॉ. परमप्रभाजी जी द्वारा मंगल पाठ का श्रवण कराकर पूरे आयोजन को आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन किशोर मंडल संयोजक मुदित पुगलिया व सह संयोजक विशाल बोथरा द्वारा किया गया। अध्यक्ष विक्रम मालू ने कहा कि साध्वीश्री की प्रेरणा से श्रीडूंगरगढ़ में अनेक ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायी कार्य संपन्न हुए हैं। साध्वीश्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को पुरस्कार प्रदान किया।

मर्यादा महोत्सव पर क्वेस्ट प्रतियोगिता के विविध आयोजन

मदुरै

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित "मर्यादा क्वेस्ट (ग्रुप क्विज) चलो खोजें मर्यादा का मर्म" प्रतियोगिता का आयोजन मदुरै तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन, मदुरै में किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित यह क्विज प्रतियोगिता अत्यंत रोचक, प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक रही। उक्त जानकारी तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा दीपिका फूलफगर एवं सभा निवृतमान अध्यक्ष अशोक जीरावला ने दी।

इचलकरंजी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित मर्यादा महोत्सव पर जनवरी माह की कार्यशाला तेरापंथ महिला मंडल इचलकंरजी द्वारा आयोजित मर्यादा क्वेस्ट चलो खोजें मर्यादा का मर्म का आयोजन तेरापंथ भवन में रखा गया। कुल ३५ बहनो की उपस्थिति रही। सभी ने उत्साहपूर्वक मर्यादा क्वेस्ट प्रतियोगिता मे भाग लिया। कार्यशाला का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री समता चोपड़ा ने किया।

शिवकाशी

मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिवस पर शिवकाशी में अभातेमम द्वारा निर्देशित क्वेष्ट कार्यक्रम "आओ मर्यादा के मर्म को समझें" का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम की विशेष बात यह रही कि अंत में दोनों टीमों के अंक बराबर रहे। सभी बहनों का मत था कि ऐसे ज्ञानवर्धक कार्यक्रम और अधिक होने चाहिए। उक्त जानकारी मंत्री कुसुम बैद ने दी।

रिसडा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार मर्यादा क्वेस्ट का आयोजन रिसडा क्षेत्र में गोष्ठी रखी गई। गोष्ठी में मर्यादा क्वेश्चन कार्यशाला का आयोजन किया गया। सामूहिक जाप से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

इरोड

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार मर्यादा क्वेस्ट प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी पावनप्रभा जी ठाणा 4 के सानिध्य में तेरापंथ महिला मंडल इरोड में किया गया। सभी ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के दिए गए। करणीय कार्य की सराहना करी और इस प्रतियोगिता को सभी के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताया।

आचार्य भिक्षु अहिंसा के व्याख्याकार थे

लिलुआ।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी के तीसरे चरण का त्रिदिवसीय कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा आचार्य भिक्षु का जन्म पंचम अर में मारवाड़ के कंटालिया ग्राम में हुआ। वे प्रसन्नचित थे। उनमें चंद्रमा जैसी निर्मलता, सूर्य जैसी तेजस्विता और सागर जैसी गंभीरता के समान उनमें दर्शन होते थे। उनका विराट व्यक्तित्व सब को आकर्षित करने वाला था। उनका आभा मंडल निर्मल और पवित्र था। उनका जीवन संघर्ष से ओतप्रोत था। उनके जीवन में अनेक उतार चढ़ाव आए। वे कष्टों से घबराए नहीं वे हमेशा सत्य के मार्ग पर चले। आचार्य भिक्षु के तीन दृष्टांत की चर्चा करते हुए मुनि ने कहा कि आचार्य भिक्षु अहिंसा के व्याख्याकार थे। अहिंसा का उद्देश्य जीव रक्षा नहीं होकर आत्म रक्षा होना चाहिए। भगवान महावीर ने अहिंसा को संयम की उपज बताया है। आचार्य भिक्षु ने धर्म की अनेक कसौटियां बताई उसमें एक कसौटी है हृदय परिवर्तन। उपदेश में धर्म है ,जबरदस्ती में धर्म नहीं है। मुनि ने आगे कहा आचार्य भिक्षु अनुशासन प्रिय संत थे। वे स्वयं अनुशासन में रहते थे और दूसरों को भी अनुशासन में रहने की प्रेरणा देते थे। अनुशासन हीनता उन्हें बर्दाश्त नहीं थी। जिन्होंने भी अनुशासन मर्यादा का लोप किया उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही हुई। मुनि ने आगे कहा आचार्य भिक्षु अभाव में जिएं लेकिन कभी भी उन्होने अभाव महसूस नहीं किया। वे हमेशा जागरुक रहे और साधना का जीवन जिया। मुनि कुणाल कुमार ने गीतका संगान किन। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अनिल जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। आभार सभा मंत्री शरद लूनिया और संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

सर्वाइकल कैंसर जांच शिविर का आयोजन

बारडोली।

विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में बारडोली स्थित शिशु दीप अस्पताल में तेरापंथ महिला मंडल, बारडोली द्वारा निःशुल्क "आरोग्यम" सर्वाइकल कैंसर जांच शिविर का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य महिलाओं में कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना तथा समय रहते प्राथमिक स्वास्थ्य जांच के माध्यम से रोग की पहचान करना रहा।

इस निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में बारडोली सहित आसपास के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से आई 194 महिलाओं की निःशुल्क स्वास्थ्य जांच की गई। बड़ी संख्या में महिलाओं एवं बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का परिचय दिया।

शिविर के दौरान प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. ज्योतिष पटेल ने महिलाओं को स्तन कैंसर, सर्वाइकल कैंसर सहित विभिन्न प्रकार के कैंसर के प्रारंभिक लक्षणों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने समय पर जांच कराने की आवश्यकता, बचाव के उपायों एवं उपलब्ध उपचार विकल्पों पर भी विस्तार से मार्गदर्शन दिया।

महिलाओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के डॉक्टर ने सरल एवं प्रभावी ढंग से उत्तर दिए। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल, बारडोली की अध्यक्ष हेमलता सिंघवी, मंत्री चेतना पितलिया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष महावीर दक तथा डॉ. नेहा पटेल विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने महिला मंडल की इस पहल को समाज के लिए अत्यंत उपयोगी एवं सराहनीय बताया। तेरापंथ महिला मंडल, बारडोली द्वारा आयोजित "आरोग्यम" स्वास्थ्य शिविर समाज में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक प्रेरणादायक एवं सराहनीय कदम सिद्ध हुआ। जिससे महिलाओं को समय पर जांच एवं सही जानकारी प्राप्त हो सकी।

संक्षिप्त खबर

सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन

इरोड। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार इरोड तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन तेरापंथ भवन में रखा गया। आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या पावन प्रभा जी के सानिध्य में यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सभा अध्यक्ष, ट्रस्ट, तेरापंथ युवक परिषद के सभी पदाधिकारी इस अवेयरनेस प्रोग्राम में सम्मिलित हुए। साध्वीश्री जी ने बहनों को खान-पान की शुद्धता आहार बाजार के भोजन से बचने और कम से कम उपयोग करने की सलाह दी। डॉ चित्रा ने बहनों को सर्वाइकल कैंसर के मुख्य लक्षण, उसकी रोकथाम और वैक्सीनेशन आदि की जानकारी दी और बहनों को यह प्रेरणा दी कि अपनी बेटियां जो 9 से 14 साल के बीच में है सभी का वैक्सीनेशन करवाए और सभी विवाहित स्त्रियों को यह वैक्सीन लगवाना चाहिए ।मंत्री कविता सिंघी जी ने सभी का आभार और धन्यवाद ज्ञापन किया।

स्टेशनरी वितरण कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद। तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर अहमदाबाद के एक पिछड़े विस्तार में सेवा, संवेदना और संस्कारों से परिपूर्ण स्टेशनरी वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस सेवा-कार्य के अंतर्गत स्लम एरिया के लगभग 150 बच्चों को उनकी शिक्षा को सशक्त बनाने हेतु स्टेशनरी किट (कॉपी, पेन, पेंसिल, रबर, शार्पनर, बोर्ड आदि) वितरित की गई। इस कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद के अध्यक्ष प्रदीप बागरेचा, किशोर मंडल सह-प्रभारी राहुल बोराणा, संयोजक मनन बागरेचा, सह-संयोजक भुवल छाजेड़, दिलीप संकलेचा एवं खुश चोपड़ा की गरिमामयी उपस्थिति रही।

निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा तेरापंथ धर्म संघ के 162वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप जांच शिविर का समायोजन विनस इंटरनेशनल स्कूल में किया गया। इस अवसर पर राजाजीनगर विधायक एवं पूर्व शिक्षा मंत्री कर्नाटक सुरेश कुमार ने स्टाल पर पधारकर तेयुप सदस्यों से एवं स्टाफ से वार्तालाप कर शुभकामनाएं संप्रेषित की। राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरोहिया, अभातेयुप के अभूतपूर्व अध्यक्ष युवा गौरव विमल कटारिया, आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ सेवा केंद्र के अध्यक्ष ललित माण्डोत एवं अनेक सदस्यों ने तेयुप द्वारा संचालित मानव सेवा के उपक्रम की खूब सराहना करते हुए मंगलकामना संप्रेषित की। कुल 144 सदस्यों ने इसका लाभ लिया। तेरापंथ महिला मंडल राजाजीनगर द्वारा एटीडीसी -श्रीरामपुरम में आयोजित निःशुल्क कैंसर जांच शिविर की जानकारी भी संप्रेषित की गई। सुव्यवस्थित आयोजन करने में दीपाश्री, श्यामला एवं धनुश्री का अथक श्रम नियोजित रहा।

सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग कैंप का आयोजन

रिसड़ा। आरोग्यम प्रोजेक्ट के तहत 'विश्व कैंसर जागरूकता दिवस' के विशेष अवसर पर मातृ सदन हॉस्पिटल, रिसड़ा में 'सरवाइकल कैंसर स्क्रीनिंग (Pap Smear Test)' शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। मंगलाचरणः कार्यक्रम का मुख्य अतिथि डॉ. रशमी का भावभीना स्वागत किया गया। गरिमामयी उपस्थितिः इस अवसर पर सभा अध्यक्ष प्रदीप महनोत एवं अन्य गणमान्य पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से बहनों का उत्साहवर्धन किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ हावड़ा।** प्रवासी स्व. तिलोक चंद-शांति देवी बच्छावत के सुपुत्र प्रतीक-मधु बच्छावत के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुनीत नाहटा एवं राकेश कुमार चिंडालिया ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **इचलकरंजी।** जवेरीलाल पुखराज भंसाली का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास सुराणा एवं पंकज जोगड़ ने मांगलिक मंत्रोच्चार का संगान कर संस्कार विधि को सानन्द संपादित किया।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** मनीष दुगड़ प्रवासी पूर्वांचल कोलकाता का नूतन गृह प्रवेश के मंगल कार्यक्रम जैन संस्कारक पुष्पराज सुराना एवं मुकेश सेठिया ने रुद्राक्ष अपार्टमेंट, सरत चट्टेर्जी लेन, लेक टाउन, कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **श्रीडूंगरगढ़।** ऋषभ बैद के प्रतिष्ठान जय बजरंग बली किराना स्टोर का शुभारंभ संस्कार जैन संस्कार विधि से परिवारजन, मित्रजनों, तेयुप अध्यक्ष विक्रम मालू, मंत्री पीयूष बोथरा की उपस्थिति में जैन संस्कारक प्रदीप पुगलिया व चमन श्रीमाल ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी विशाल जैन एवं अनु जैन के पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से रेजेंट कोर्ट, रघुनाथपुर, कोलकाता उनके निवास स्थान पर हुआ। जैन संस्कारक, प्रेक्षा प्रशिक्षक तथा TPF पूर्वांचल के अध्यक्ष राकेश सिंघी ने बड़े ही सुंदर और पूर्ण मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संचालित किया।

उपनिषद फिनाले का भावपूर्ण आयोजन

हिमायतनगर।

तेरापंथ भवन में कन्या मंडल द्वारा उपनिषद फिनाले का भावपूर्ण एवं उत्साहपूर्ण आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल (ABTKM) द्वारा परिकल्पित उपनिषद परियोजना के अंतर्गत तथा तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

उपनिषद कार्यक्रम तीन चरणों में आयोजित किया गया। प्रथम चरण में कन्याओं द्वारा अपने दादा-दादी के साथ बिताए गए स्नेहिल क्षणों पर आधारित एक मिनट के वीडियो प्रस्तुत किए गए। द्वितीय चरण में दादी के साथ चित्र साझा करते हुए उनसे सीखी गई पारंपरिक रेसिपी को प्रस्तुत किया गया।

तृतीय एवं अंतिम फिनाले चरण का आयोजन हिमायतनगर तेरापंथ भवन में हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य कन्याओं को अपने दादा-दादी से भावनात्मक रूप से जोड़ना एवं उनके साथ मूल्यवान समय बिताने की प्रेरणा देना था। कार्यक्रम में दादी–पोती के स्नेह, संस्कार और अनुभवों से भरे रिश्तों की सुंदर झलक देखने को मिली, तेरापंथ महिला मंडल की बहनों का भी सराहनीय योगदान रहा। इस अवसर पर कार्यक्रम की संरक्षिका विमलेश सिंघी ने सरप्राइज़ दादी का खिताब जीतकर सभी को प्रसन्न किया। कार्यक्रम की सफलता में अंजू गोलचा, मनीषा सिंघी, मीनाक्षी सुराणा तथा तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा नामिता का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

पूर्वोदय–2026 जोनल कॉन्फ्रेंस का भव्य आयोजन

कांटाबांजी।

बनमाली पैलेस, कांटाबांजी में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, पूर्व जोन–2 द्वारा आयोजित पूर्वोदय–2026 जोनल कॉन्फ्रेंस का एवं गरिमामय आयोजन हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि गणेश राम खूंटिया (वन व पर्यावरण मंत्री) रहे। विशिष्ट अतिथियों में नवीन जैन (विधायक, टिटिलागढ़), लक्ष्मण बाग (विधायक, कांटाबांजी) तथा शिवा महंती (प्रांतीय उपाध्यक्ष, भाजपा) शामिल रहे। फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, टीपीएफ राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी एवं जोन अध्यक्ष सुरेंद्र चौरड़िया, ईस्ट जॉन 2 अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। आध्यात्मिक सत्र में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाण प्रज्ञा जी एवं समणी मध्यस्थ प्रज्ञा जी ने संघ पुरुष चिरायु हो विषय पर प्रेरक उद्बोधन दिया। कार्यक्रम के विभिन्न तकनीकी एवं वैचारिक सत्रों में बिलासपुर हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज गौतम चौरडिया ने पूर्वोदय–2026, अधिवक्ता राज सिंघवी (टीपीएफ आरबीट्रेटर) ने कारगर वसीयतनामा, मनोज जैन (अध्यक्ष, उड़ीसा प्रांतीय सभा), टीपीएफ राष्ट्रीय ट्रस्टी शंकर प्रशाद जैन, चार्टर्ड अकाउंटेंट संभव डागा ने पारिवारिक न्यास, रितु चौरडिया नई सोच नई दिशा एवं सौर ऊर्जा में व्यावसायिक अवसर, चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रतीक बथवाल ने डिजिटल परिवर्तन, चार्टर्ड अकाउंटेंट संभव डागा एवं मानवीय सामर्थ्य तथा आनंद सोनी ने संपत्ति सृजन विषय पर सारगर्भित प्रस्तुतियाँ दीं, जिन्हें श्रोताओं ने अत्यंत सराहा। सायंकाल आयोजित भिक्षु भजन संध्या में श्रद्धानिष्ठ गायक कमल सेठिया की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

संबोधि

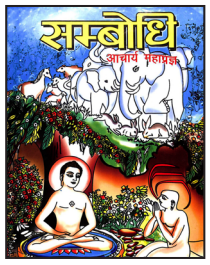

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

(६) प्रतिसंलीनता

यह बाहर और भीतर के संक्रमण का द्वार है। इसका अर्थ है-अपनी समस्त वृत्तियों के मुख को बाहर से भीतर की ओर मोड़ना। चेतना की धारा इन्द्रियों के माध्यम से जो प्रतिक्षण बहकर प्रवाहित हो रही है, उसे मोड़कर अन्दर की तरफ गति देना। 'अणुसोयसुहोलोगो' - अनुस्रोत में चलना सरल है, सारा संसार चल रहा है। किन्तु प्रतिस्रोत मूल उद्गम की ओर नदी का बहना कठिन है। प्रतिसंलीनता उद्गम की ओर प्रयाण है। यह संसार का पार है। अनुस्रोत पार नहीं है, संसार है, चक्र है। अनन्त जन्मों से बाहर जाने का जो अभ्यास है, प्रतिसंलीनता उसे तोड़ती है। यह पुनः अपने में संलीन होने का सूत्र है।

चित्त चेतना से जुड़ता है तब सचेतन होता है और बिछुड़ता है तब जड़। हमारा चित्त प्रायः यंत्रवत् है। चेतना से उसका सम्पर्क बहुत कम रहता है। महावीर ने कहा- 'अगेणचित्ते खलु अयं पुरिसे'- मनुष्य अनेक चित्तवाला है। चेतना से जुड़े रहने वाला चित्त बहुत नहीं होता। एक साथ अनेक काम करना अनेक चित्तता की सूचना है। जीवन में जो कुछ चलता है वह सब यान्त्रिक है। पश्चिम के विचारशील व्यक्ति कोलीन विल्सन ने कहा है-जब हम कुशल हो जाते हैं तो हमारे भीतर जो एक रोबोट-यंत्रमानव है वह काम शुरू कर देता है। चेतना की उपस्थिति अनिवार्य नहीं होती है। हर रोज घर से बाहर और बाजार से घर यातायात करते हैं। कुछ सोचना, विचारना और देखना नहीं पड़ता, किन्तु जैसे ही कहीं अपरिचित स्थान में जाते हैं वहां सतर्क होना पड़ता है। यंत्र मानव की वहां नहीं चलती। मनोवैज्ञानिकों का कहना है-सात वर्ष में जो आप सीख लेते हैं, आपके पूरे जीवन में ७५ प्रतिशत वही पीछा करता है। क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, प्रेम आदि जीवन भर चलते हैं। क्योंकि वही सीखा हुआ था। प्रतिसंलीनता इन सबको समाप्त करने का एक साहसिक कदम है। अपने घर में प्रविष्ट होने के लिए सतर्क होना होगा। बाहर से संबंध-विच्छेद करना होगा, चेतना को बाहर ले जाने वाले समस्त आलंबनों से दूर हटना होगा। मनोविज्ञान की भाषा में वृत्तियों का मार्गान्तरीकरण, संस्करण, उच्चध्येय में प्रवाहित करना है।

आंतरिक तप के प्रकार

(१) प्रायश्चित्त

अन्तर् तप का यह शुभारंभ है। व्यक्ति की दृष्टि दूसरों से हटकर स्व-पर केन्द्रित हो जाती है। वह स्वयं को देखता है, 'मैं कैसा हूं' भला हूं या बुरा, सही हूं या गलत। प्रायश्चित्त का अर्थ है-चित्त-शोधन। जब तक व्यक्ति को स्वयं का बोध नहीं होता, तब तक चित्त शोधन कठिन है। अनेक व्यक्ति एक ही प्रकार की भूलों को बार-बार दोहराते हैं। एक भूल का प्रायश्चित्त करते हैं और संकल्प करते हैं कि अब फिर नहीं करूंगा, किन्तु कुछ ही समय बाद वे फिर उसी की पुनरावृत्ति कर लेते हैं। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री सीताजी (पाली) दीक्षा क्रमांक 229

साध्वीश्री तपस्विनी थी। आप द्वारा की गई किंचित तपस्या का विवरण इस प्रकार है- सं. 1910 में ३०, 1911 में ३०, 1912 में ३५, 1913 में ३०, 1914 में २९, 1915 में ९ और 1916 में १३ दिन का तप किया। आपने और भी तप किया पर उसका विवरण प्राप्त नहीं है।

– साभार : शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

सह-अस्तित्व और सापेक्षता

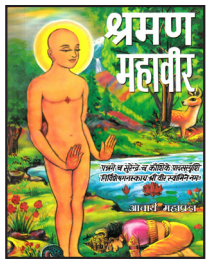

सिद्धसेन दिवाकर ने यही बात काव्य की भाषा में कही है- भगवन् ! सिन्धु में जैसे सरिताएं मिलती हैं, वैसे ही आपकी अनेकान्त दृष्टि में सारी दृष्टियां आकर मिल जाती हैं। उन दृष्टियों में आप नहीं मिलते, जैसे सरिताओं में सिन्धु नहीं होता।'

सत्य के विषय में चल रहा विवाद एकांगी दृष्टि का विवाद है। पांच अंधे यात्रा पर जा रहे थे। एक गांव में पहुंचे। हाथी का नाम सुना। उसे देखने गए। उनका देखना आखों का देखना नहीं था। उन्होंने छूकर हाथी को देखा। पांचों ने हाथी को देख लिया और चित्र कल्पना में उतार लिया। अब परस्पर चर्चा करने लगे। पहले ने कहा- 'हाथी खंभे जैसा है।' दूसरा बोला- 'तुम गलत कहते हो, हाथी खंभे जैसा नहीं है, वह केले के तने जैसा है।' तीसरा दोनों को झुठलाते हुए बोला- 'हाथी मूसल जैसा है।' चौथा बोला- 'तुम भी सही नहीं हो, हाथी सूप जैसा है।' पांचवां बोला- 'तुम सब झूठे हो, हाथी मोटी रस्सी जैसा है।' उन सबने अपने-अपने अनुभव के चित्र कल्पना के ढांचे में मढ़ लिये। अब एक रेखा भर भी इधर-उधर सरकने को अवकाश नहीं रहा। वे अपने-अपने चित्र को परम सत्य और दूसरों के चित्र को मिथ्या बतलाने लगे। विवाद का कहीं अन्त नहीं हुआ।

एक आदमी आया। उसके आखें थीं। उसने पूरा हाथी देखा था। वह कुछ क्षण अंधों के विवाद को सुनता रहा। फिर बोला- 'भाई! तुम लड़ते क्यों हो? उन्होंने अपनी सारी कहानी सुनाई और उससे अपने-अपने पक्ष का समर्थन चाहा। आगंतुक आदमी बोला- 'तुम सब झूठे हो।' पांचों चिल्लाए- 'यह कैसे हो सकता है?' हमने हाथी को छूकर देखा है।' आगंतुक बोला- 'तुमने हाथी को नहीं छुआ। उसके एक-एक अंग को छुआ। चलो, तुम्हारा विवाद हाथी के पास चलकर समाप्त करता हूं।' वह उन पांचों को हाथी के पास ले आया। एक-एक अंग को छुआकर बोला-

'तुम सच हो कि हाथी खंभे जैसा है, पर तुमने हाथी का पैर पकड़ा, पूरा हाथी नहीं पकड़ा।'

'तुम भी सच हो कि हाथी केले के तने जैसा है, पर तुमने हाथी की सूंड पकड़ी, पूरा हाथी नहीं पकड़ा।'

'तुम भी सच हो कि हाथी मूसल जैसा है, पर तुमने हाथी का दांत पकड़ा, पूरा हाथी नहीं पकड़ा।'

'तुम भी सच हो कि हाथी सूप जैसा है पर तुमने हाथी का कान पकड़ा, पूरा हाथी नहीं पकड़ा।'

'तुम भी सच हो कि हाथी मोटी रस्सी जैसा है, पर तुमने हाथी की पूंछ पकड़ी, पूरा हाथी नहीं पकड़ा।'

'तुम अपनी-अपनी पकड़ को सत्य और दूसरों की पकड़ को मिथ्या बतलाते हो, इसलिए तुम सब झूठे हो। तुम अवयव को अवयवी में मिला दो, खण्ड को अखण्ड की धारा में बहा दो, फिर तुम सब सत्य हो।'

विश्व का प्रत्येक मूल तत्त्व अखण्ड है। परमाणु भी अखण्ड है और आत्मा भी अखण्ड है। किन्तु कोई भी अखण्ड तत्त्व खण्ड से वियुक्त नहीं है। महावीर ने सापेक्षता के सूत्र से अखण्ड और खण्ड की एकता को साधा। उन्होंने रहस्य का अनावरण इन शब्दों में किया-'जो एक को जान लेता है, वह सबको जान लेता है। सबको जानने वाला ही एक को जान सकता है।'

आग्रही मनुष्य आंख पर आग्रह का उपनेत्र चढ़ाकर सत्य को देखता है और अनाग्रही युक्ति के अंचल में मनन का प्रयोग करता है।

आग्रही मनुष्य आंख पर आग्रह का उपनेत्र चढ़ाकर सत्य को देखता है और अनाग्रही मनुष्य अनन्त चक्षु होकर सत्य को देखता है।

भगवान् महावीर का युग तत्त्व-जिज्ञासा का युग था। असंख्य जिज्ञासु व्यक्ति अपनी जिज्ञासा का शमन करने के लिए बड़े-बड़े आचार्यों के पास जाते थे। अपने-अपने आचार्यों के पास जाते ही थे पर यदा-कदा दूसरे आचार्यों के पास भी जाते थे। इन जिज्ञासुओं में स्त्रियां भी होती थीं। भगवान् महावीर ने अपने जीवन-काल में हजारों-हजारों जिज्ञासाओं का समाधान किया। उनके सामने सबसे बड़े जिज्ञासाकार थे, उनके ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति गौतम। महावीर की वाणी का बहुत बड़ा भाग उनकी जिज्ञासाओं का समाधान है। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

जयाचार्य की लोकप्रिय कृति : चौबीसी

चंचलता-निवारण

प्रेक्षाध्यान की पद्धति में कायोत्सर्ग को बहुत महत्त्व दिया गया है। उसको साधने के लिए शारीरिक स्थिरता, आसन की एकरूपता आवश्यक होती है। ग्यारहवें गीत में उल्लिखित है–

तन चंचलता मेट नैं, पद्मासन आप विराज रे।

अनिमेष प्रेक्षा

मानसिक एकाग्रता के विकास में त्राटक अथवा अनिभेष प्रेक्षा का प्रयोग बहुत सहायक होता है। भगवान महावीर भी उसका अभ्यास किया करते थे। एक बिन्दु पर दृष्टि को अपलक टिकाए रखना त्राटक या अनिमेष-प्रेक्षा है। इसी का निर्देश तीसरे गीत में प्राप्त है।

एक पुद्गल दृष्टि थाप नै, कीधो है मन मेरा समान के।

वीर और शान्त-रस

नौ रसों में वीर रस और शान्त रस एक-दूसरे से विरोधी स्वभाव वाले हैं। आध्यात्मिक साधना में इन दोनों की उपयोगिता है। तपस्या के लिए वीर रस और क्षमा के लिए शान्त रस का सेवन आवश्यक होता है। इनका उल्लेख चौथे गीत में किया गया है-

वीर रसे करी हो, कीधी तपस्या विशाल।
उपशम-रस नी हो, बागरी प्रभु वाण।

प्रथम गीत में शान्तरस का उल्लेख इस प्रकार किया गया है–

सवेग सरवर झूलता उपशम-रस लीना।

अनुराग से विराग

भौतिकता से विराग करने के लिए आध्यात्मिकता में अनुराग करना आवश्यक होता है। अनुरागाद् विरागः स्यातू । बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि ने अपनी भावी पत्नी राजीमती का परित्याग कर दिया। इसके कारण को खोज में कविवर अपनी कल्पना-शक्ति का उपयोग करते हुए कहते हैं- अरिष्टनेमि का प्रेम शिव-सुन्दरी (मुक्ति-स्त्री) के साथ हो गया था। इसलिए उन्होंने राजीमती को छोड़ दिया–

राजीमती छांड़ी जिनराय, शिव-सुन्दर स्यूं प्रीत लगाय।

विरोधाभास अलंकार

बाईसवें गीत में आचार्य प्रवर लिखते हैं—

राग-रहित शिव सुख स्यूं प्रीत, कर्म हणे बलि देष रहीत।

भगवन्! आप वीतराग हैं। फिर भी मुक्ति-सुखों से आपकी प्रीति है। आप देषरहित हैं। फिर भी कर्म-शत्रुओं का बखूबी हनन करते हैं।

अनुप्रास

काव्यपाठ को सरस बनाने में अनुप्रास अलंकार महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। प्रस्तुत काव्य में इसका भी प्रयोग हुआ है। उदाहरण स्वरूप उन्नीसवें गीत का निम्नाकित पद्य मननीय है-

जपत जाप खपत पाप तपत ही मिटायो।
मल्लिदेव त्रिविध सेव जग अछेरो पायो।।

स्त्री में पुरुषत्व का आरोपण

उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथ के बारे में जैन परंपरा में दो अभिमत हैं। दिगम्बर मत के अनुसार वे पुरुष थे और श्वेताम्बर आम्नाय उन्हें स्त्री मानता है। जयाचार्य ने मल्लिनाथ के स्तवन में उन्हें पुरुष के रूप में व्याख्यात किया है। उन्होंने जननी की उपमा न देकर उन्हें जनक की उपमा से उपमित किया है-

जगदयाल! तूं ही कृपाल, जनक ज्यूं सुखदायो।
वत्सल नाथ स्वाम साहिब, सुजश तिलक पायो।।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

फरवरी 2026
सप्ताह के विशेष दिन

24 फरवरी
भगवान संभवनाथ च्यवन कल्याणक

28 फरवरी
भगवान मल्लिनाथ निर्वाण, भगवान मुनिसुव्रत दीक्षा कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री उदयचंदजी (सरदारशहर) दीक्षा क्रमांक 508

मुनिश्री ने उपवास से नौ तक लड़ीबद्ध तप किया। तप की तालिका इस प्रकार है- उपवास/355, 2/22, 3/5, 4/5, 5/5, 6/2, 7/4, 8/2, 9/2 मुनिश्री ने 17 साल संयम पर्याय की सम्पन्नता लघुसिंह निष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी से की। आपने सं 2009 भीलवाडा में परिपाटी प्रारंभ की। क्रमानुसार तप में बढ़ते हुए परिपाटी का पूर्वार्ध सम्पन्न किया। उत्तरार्ध के दो थौकडे हुए और वह दो घंटे संथारे में दिवंगत हो गये।

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 फरवरी - 22 फरवरी 2026

सीपीएस कार्यशाला का भव्य आयोजन

सिटीलाइट, सूरत।

CPS एकेडमी अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की एक प्रशिक्षण पहल है, जिसका उद्देश्य युवाओं में आत्मविश्वास, प्रभावी वक्तृत्व, मंच संचालन, संवाद कौशल एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना है।CPS एकेडमी के प्रशिक्षण सत्रों में प्रतिभागियों को भाषण कला, प्रस्तुति कौशल, बॉडी लैंग्वेज, आत्म-प्रेरणा, टीमवर्क एवं नेतृत्व से जुड़े विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है, जिससे वे सामाजिक, व्यावसायिक एवं संगठनात्मक क्षेत्रों में प्रभावी भूमिका निभा सकें।

सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखने वाली संस्था अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मार्गदर्शन में तेरापंथ युवक परिषद, सूरत द्वारा आयोजित "कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS)" प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीक्षांत समारोह 1 फरवरी को तेरापंथ भवन सिटीलाइट में गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मंचासीन अतिथियों का स्वागत परिषद अध्यक्ष नमन मेड़तवाल ने किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी ने कहा कि युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम समय की आवश्यकता हैं, जो व्यक्तित्व को निखारने के साथ नेतृत्व क्षमता को भी सशक्त करते हैं।

मुख्य अतिथि भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के ट्रस्टी हर्षिता जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि आत्मविश्वास सफलता की पहली सीढ़ी है और ऐसे प्रशिक्षण युवाओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने की दिशा प्रदान करते हैं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तेरापंथी सभा के मैनेजिंग ट्रस्टी अनिल बोथरा ने प्रतिभागियों को प्रभावी वक्तृत्व, आत्म-प्रेरणा एवं नेतृत्व कौशल के व्यावहारिक सूत्रों से अवगत कराया। इस अवसर पर सीपीएस एकेडमी के सहप्रभारी अमित गन्ना ने संभागीयो को CPS के बाद आगे व्यक्तित्व विकास का कार्यक्रम मेक योर मार्क करने की भी प्रेरणा दी।

सूरत परिषद के शाखा प्रभारी निलेश टेबा ने जूनियर सीपीएस और PDI जैसे आयामों को परिषद द्वारा संपादित करने का विचार व्यक्त किया । जोनल ट्रेनर पलक जैन, डिंपल सियाल एवं नेशनल ट्रेनर प्रीति धाकड़ के मार्गदर्शन में प्रतिभागियों ने अपने संवाद एवं व्यक्तित्व कौशल को सशक्त किया।

तेरापंथ युवक परिषद, सूरत के संयोजक गणेश बंब ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दीक्षांत समारोह के अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन भी CPS प्रतिभागियों द्वारा आत्मविश्वास के साथ किया गया।

शासनमाता की पुण्यतिथि पर उद्गार

भक्ति की किश्ती से पार लगा दो

● **शासनश्री साध्वी मंजू प्रभा** ●

शासन मां ! (ओ) शासन मां
ध्यान धरते हैं, दिल से स्मरते है, दर्शन चाहते हैं।।
शासन मां। शासन मां!

भीगी पलकों से पंथ बुहारूं
मन वीणा के तारों को संकृत आज बनाऊं
दिल का तराना है, मन मस्ताना है, महफिल सजाते हैं।

भक्ति की किश्ती से पार लगा दो,
चाहों की नव राहों को, उज्ज्वलमय बना दो
उलझी अनुबंधों में, मोह निबंधो में, निजात चाहू मैं॥

सपनों की दुनिया का क्षणिक नजारा
अनुरंजित मन, पाएं शीघ्र किनारा
अमिट परछाई मिले, अन्तज्योति जले, वांछित फलते हैं॥

गुरु अनुरक्ति, कार्य कुशलता
हर दिल की धड़कन में, गूंजे मधुर तराना
अकथ कहानी है, सबकी जुबानी है, गौरव गाते हैं।।

अनुपम श्रध्दा का अर्घ्य चढ़ाऊं
अभिनव सरगम से, अंतर तान सुनाऊं
शिवसुख पाऊं मैं, तन्मय बन जाऊ मैं, अरमान सजाते हैं।।

लय - ओ मां!... तू कितनी अच्छी

भिक्षु विचार दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य विजयनगर तेरापंथ भवन बेंगलुरु में भिक्षु विचार दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। नवकार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विजय स्वर संगम टीम ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

कार्यशाला में पधारे हुए सभी का स्वागत तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष विकास बांठिया ने किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद संगठन मंत्री रोहित कोठारी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करते हुए कहा आचार्य श्री भिक्षु ज्योतिपुंज थे उन्होंने धार्मिक जगत में नया प्रकाश फैलाने का प्रयास किया। मुनिश्री ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा आचार्य श्री भिक्षु का दर्शन मोक्ष प्राप्ति का दर्शन है उन्होंने सूक्ष्म दृष्टि से भगवान महावीर के सिद्धांतों को समझाने का प्रयास किया। लौकिक और लोकोत्तर कार्यों की भेद रेखा को समाज के सामने प्रस्तुत किया।

मुनिश्री ने आगे कहा भारतीय संस्कृति के आदर्शों को भगवान महावीर के आगम वाणी के अनुरूप बढ़ाने का प्रयास किया। आचार्य श्री भिक्षु के सत्य सिद्धांत को समझने का प्रयास करें। मुख्य वक्ता उपासक महेंद्र दक ने कहा सम्यक श्रद्धा को बनाएं रखना और स्वयं में टिकाएं रखना बहुत जरूरी है। आचार्य श्री भिक्षु का साहित्य भिक्षु विचार दर्शन के माध्यम से समझने का प्रयास करें। उन्होंने आगे कहा आवेग और आवेश को शांत करके ही सम्यक्त्व को पुष्ट किया जा सकता है। उपासक ने तेरापंथ प्रबोध के कुछ पद्यों का विवेचन करते हुए आचार्य श्री भिक्षु के तत्व सिद्धांतों को बताने का प्रयास किया।

शाखा प्रभारी आलोक छाजेड़, भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला सलाहकार राकेश पोकरणा ने विचार रखें। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष पवन बैद ने किया। इस अवसर पर सभा उपाध्यक्ष भँवरलाल मांडोत एवं प्रबंध मंडल, युवक परिषद् से प्रदीप बाबेल, कमलेश चोपडा, महिला मंडल अध्यक्षा महिमा पटावरी, ट्रस्ट अध्यक्ष पुखराज श्रीश्रीमाल, अभातेयुप परिवार सहित श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन संगठन मंत्री पीयूष ललवानी ने किया।

विशेष अनुष्ठान का आयोजन

होसकोटे। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में माघ पूर्णिमा एवं रविपुष्य नक्षत्र पर विशेष अनुष्ठान का आयोजन होसकोटे में हुआ। साध्वी संयमलताजी ने कहा, अनुष्ठान आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम है। मंत्र सकारात्मकता को बढ़ाने वाला तथा नकारात्मकता के दूर करता है। । साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा, पूर्णिमा का योग मन की स्थिरता की प्राप्त करता है। शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष का जनम एवं हमारे शरीर में चंद्रमा की स्थिति की विस्तृत जानकारी दी। बीपी, हार्ट अटैक जैसे बीमारियों को दूर करने हेतु मुद्रा के प्रयोग बताए, स्वरों की जानकारी देते हुए चंद्रस्वर में अनुष्ठान का प्रारंभ करते हुए ओम की ध्वनि एवं अर्हम का रक्षा कवच बनाया। बीजाक्षरों एवं भक्तमार के सात मंत्रों का उच्चारण किया।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

बेंगलूरु। मकला मरम्मा मंदिर के 26वें वार्षिक अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, बेंगलूरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के सहयोग से एक भव्य निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस सेवा-प्रधान पहल का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचाना रहा। इस स्वास्थ्य शिविर से कुल 85 से अधिक लोगों ने लाभ उठाया।

कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद गांधी नगर के अध्यक्ष प्रसन्न धोका, मंत्री प्रदीप चोपड़ा, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, पूर्व अध्यक्ष रजत वेद तथा सक्रिय सदस्य विवेक मराठी, मुदित कोठारी, राकेश भंडारी एवं पंकज भंडारी की सराहनीय उपस्थिति और सेवाएं रहीं। साथ ही ATDC श्रीरामपुरम स्टाफ का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।

जैन जीवन शैली पर विशेष कार्यशाला का भव्य आयोजन

लिलुआ।

आचार्य महाश्रमण के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार ठाणा 3 के सानिध्य में तेरापंथ समा के तत्वावधान में संगम हॉल में जैन जीवन शैली कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- जन्म के साथ जीवन का प्रारंभ मरण के साथ जीवन का समापन होता है। जन्म और मरण' के बीच की अवस्थों जीवन है। जीवन जीना एक बात है जबकि कलात्मक ढंग से जीवन जीना दूसरी बात। आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त नौ सूत्रीय जैन जीवन शैली के सूत्रों को अपनाने से व्यक्ति स्वस्थ वव्यवस्थित जीवन जी सकता है। इस शैली को कोई भी सम्प्रदाय वाला जी सकता है। इसमें कोई सम्प्रदाय की गंध नहीं है और न ही जातिवादी कल्पना का समावेश है। वर्तमान युग में जीवनशैली विकृत होता जा रही है।

आजकल इन्सान का जन्म हॉस्पिटल में बचपन होस्टल में जवानी होटल में और शेष रही सही जिन्दगी होस्पिटल ने ही बीतती है। यह प्रक्रिया संस्कार हनन की प्रक्रिया है। इसलिए व्यक्ति स्वस्थ सद्संस्कारी व चात्रिवान बनना चाहता है और शांति समाधि का जीवन जीना चाहता है तो सम्यकदर्शन, अनेकांत, अहिंसा समणसंस्कृति, इच्छापरिमाण, सम्यक आजीविका, सम्यक संस्कार, आहारशुद्धि, व्यसनमुक्ति, सधार्मिक वात्सल्य सूत्रों की आराधना करें। मुनि ने आगे कहा जहाँ क्रूरता है वहां हिंसा है, जहां करुणा है वहां दया है,अहिंसा है। व्यसन फैशन से हट कर धार्मिक स्वस्थ जीवन जीए। मनि कुणाल कुमारजी ने जैन जीवन शैली पर आधारित गीत को संगान किया।

वरिष्ठ उपासक सुरेन्द्र सोठिया ने वक्तव्य में कहा धर्म से सद्गति होती है, पाप छोड़ने से परम गति होती है। तेरापंथ सभा लिलुआ के अध्यक्ष अनिल जैन ने स्वागत भाषण दिया। तेरापंथ महासभा के मुख्य ट्रस्टी सुरेश गोयल का सभा द्वारा सम्मान किया गया।

तप, त्याग और श्रद्धा का अनुपम उत्सव

नई दिल्ली।

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी द्वारा शाहदरा, पूर्वी दिल्ली में अपना सफल चातुर्मास संपन्न करने के पश्चात एनसीआर के नोएडा, गाजियाबाद एवं फरीदाबाद जैसे क्षेत्रों का स्पर्श कर दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आईटीओ, दिल्ली स्थित अणुव्रत भवन में पदार्पण किया गया। संघ प्रभावना का यह क्रम निरंतर जारी है। अणुव्रत भवन में आज अध्यात्म, साधना और श्रद्धा का दिव्य वातावरण साकार हुआ। शासन श्री मुनि विमल कुमार जी एवं बहुश्रुत मुनिश्री उदित कुमार जी के पावन सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ जन्म जयंती के पावन अवसर पर दिल्ली–एनसीआर स्तरीय तप अभिनंदन समारोह एवं उपासक श्रेणी सम्मान समारोह अत्यंत श्रद्धा, गरिमा और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, दिल्ली की ओर से 109 तपस्वियों तथा दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र से आए उपासक श्रेणी के सदस्यों का सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया। पूरा सभागार आध्यात्मिक ऊर्जा, तपोभाव और श्रद्धा से ओतप्रोत दिखाई दिया। बहुश्रुत मुनिश्री उदित कुमार जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में भगवान पार्श्वनाथ को करुणा, अहिंसा और क्षमा का सजीव प्रतीक बताते हुए कहा— भगवान पार्श्वनाथ का जीवन समता और शांति का संदेश है।

आज के अशांत युग में उनका दर्शन मानवता के लिए मार्गदर्शक दीपक के समान है। तपस्या के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा— तप आत्मा की शुद्धि और आत्मिक उन्नति का सशक्त साधन है।

पृष्ठ 1 का शेष

अहिंसा, संयम और...

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने सुधर्मा सभा पट्ट का अनावरण किया। योगक्षेम वर्ष व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रमोद बैद, स्वागताध्यक्ष राकेश कठोतिया, जैन विश्व भारती अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, जैन विश्व भारती लाडनूं मान्य विश्वविद्यालय के कुलपति बच्छराज दूगड़ ने भी अभिव्यक्ति दी।

अखंड परिव्राजक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने समुपस्थित जन समूह को पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में धर्म को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है। व्यक्ति को मंगल की चाह होती है कि वह जो कार्य करे वह निर्विघ्नता के साथ सम्पन्न हो, सफलता को प्राप्त हो। मंगल कामना स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी की जाती है। दूसरों के लिए मंगल कामना करना एक उच्चता का द्योतक होता है। मंगल के लिए व्यक्ति प्रयास भी कराता है और कई पदार्थ जैसे गुड़ आदि प्रयोग में आते हैं। शुभ मुहूर्त में भी कार्यारंभ करने का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु आगमकार ने अमूल्य बात कही कि सबसे बड़ा मंगल धर्म है। शास्त्रकार ने मंगल के रूप में किसी धर्म का नाम न लेते हुए कमाल की बात कही कि अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है और तप धर्म है। अहिंसा, संयम की साधना जो करेगा, तप जो भी तपेगा उसका मंगल होगा।

आज हम योगक्षेम वर्ष के लिए जैन विश्व भारती लाडनूं में प्रविष्ट हुए हैं। 6 फरवरी को प्रवेश हुआ है और संभवतः 24 फरवरी 2027 को यहाँ से प्रस्थान का कार्यक्रम है। साधिक एक वर्ष का यह समय है। योगक्षेम वर्ष की पुनरावृत्ति होने की संभावना है। हमारे परम पूजनीय गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी व युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के समय में 1989 में योगक्षेम वर्ष इसी जैन विश्व भारती परिसर में आयोजित हुआ था। आज लगभग 37 वर्ष के बाद पुनः योगक्षेम वर्ष के प्रवेश के साथ प्रवेश हुआ है। लाडनूं जो गुरुदेव तुलसी की जन्मभूमि है, मैं उनके जन्म स्थान में जाकर आया हूँ। योगक्षेम वर्ष की आयोजना हमारी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के निमित्त से हुई है। परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने जैन विश्व भारती की स्थापना की। यह संस्था मुझे बहुत महत्वपूर्ण संस्था लगी है। जहां साधना, सेवा, साहित्य आदि के अनेक रूप जुड़े हुए हैं।

आज हमारे राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री जी का आगमन हुआ है। आपने आगे भी अनेक बातें कही है। मेरा तो कहना है कि जब दुबारा आओ तो दो-तीन घंटे नहीं, दो-तीन दिनों के लिए आएँ ताकि अनेक संदर्भों में चर्चा-परिचर्चा हो सके। राजस्थान पत्रिका के गुलाबजी कोठारी भी उपस्थित हैं। योगक्षेम वर्ष के लिए कितने-कितने साधु, साध्वियाँ व समणियाँ भी आई हैं। आज मुख्य मुनि का दीक्षा-दिवस भी है। पूज्य प्रवर ने साध्वी प्रमुखा जी व साध्वी वर्याजी का परिचय भी प्रदान किया और जैन विश्व भारती में संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। इस लंबे प्रवास का सभी अच्छा उपयोग करें। हमारा प्रवास मंगलमय हो, सभी अच्छा पुरूषार्थ करें। आचार्य प्रवर की अभिवंदना में नगरपालिका लाडनूं अध्यक्ष रावत खान ने नगरपालिका की ओर से अभिनंदन पत्र आचार्य प्रवर को समर्पित किया। गुलाब कोठारी संपादक राजस्थान पत्रिका, ने कहा कि आज का दिन बड़े उत्सव का दिन है, योगक्षेम वर्ष की शुरुआत है। आचरण धर्म का सबसे बड़ा लक्षण है। धर्म संस्कृति की नींव है। मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूं कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि प्राप्त हो रही है। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन पदार्पण पर मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। आचार्य श्री का यहां पधारना राजस्थान के लिए अत्यंत गौरव और सम्मान का विषय है। आप का यहाँ एक वर्ष का प्रवास है, निश्चित ही आपकी तपस्या और आपकी वाणी का सभी को लाभ होगा। आप एक धर्म गुरु नहीं, आप मानवीय मूल्यों के जीवंत प्रतीक हैं। आपकी साधना, आपका ज्ञान लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित किया है। आपका योगदान केवल जैन समाज के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता के लिए वरदान है। आज मुझे एक साथ इतने साधु-साध्वियों के दर्शन का लाभ मिला है यह गौरव की बात है। आचार्य प्रवर के मंगल पाठ के साथ आज के जैन विश्व भारती में प्रवेश से संदर्भित कार्यक्रम का समापन हुआ।

धर्मसंघ की प्रभावना के लिए...

दीक्षा प्रदान करने के साथ ही मुमुक्ष द्वय संसारी जीवन छोड़कर संयम जीवन में प्रविष्ट हो गई। दीक्षा संस्कार के अन्तर्गत नवदीक्षितों का केश लुंचन आचार्य प्रवर की आज्ञा से साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी द्वारा संपन्न हुआ। तत्पश्चात नवदीक्षित साध्वीश्री को 'रजोहरण' प्रदान किया गया। दीक्षा संस्कार के पश्चात् साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज समण श्रेणी तेरापंथ धर्म संघ के विकास में निमित्त बन रही है और संघ में चलने वाली विभिन्न गतिविधियों के प्रचार और प्रसार में सम्मिलित है। विदेशों में समण श्रेणी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में जाकर अध्यापन का कार्य कई वर्षों से संपादित कर रही है। जैन दीक्षा भले ही कठोर दीक्षा हो परन्तु आनन्द की दीक्षा है। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि 'दसवेआलियं' हमारे बत्तीस आगमों के अन्तर्गत चार मूल में एक आगम है, जो हमारे साधु-साध्वियों के लिए अत्यंत स्मरणीय और मननीय है। साधु को कैसे बोलना चाहिए, गोचरी कैसे करनी चाहिए और अनाचार क्या है? आदि के निर्देश दसवेआलियं के विभिन्न अध्ययनों से प्राप्त होते हैं। विनय और चार समाधियों के संदर्भ में नवमें अध्ययन का उपयोग है। इसके साथ ही साधु-साध्वियों, समणियों और मुमुक्षुओं में सेवा का भाव रहे। अपनी शारीरिक और बौद्धिक क्षमताओं का उपयोग दूसरों के सहयोग और धर्मसंघ की प्रभावना के लिए करना चाहिए। क्योंकि सक्षमता की सार्थकता तभी है जब उसका अच्छा उपयोग होता रहे। सेवाकेंद्रों के संदर्भ में गुरुदेव ने फरमाया कि छापर का संतसेवा केन्द्र अब जैन विश्व भारती सेवा केंद्र में विलीन हो गया है। गुरुदेव ने उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमारजी को लाडनूं सेवा केन्द्र के लिए नियुक्त किया। योगक्षेम वर्ष के अन्तर्गत प्रेक्षध्यान और तत्त्वज्ञान के प्रशिक्षण के उपक्रम भी चलेंगे। इस हेतु 'योगक्षेम वर्ष कैलेंडर' व 'मार्गदर्शिका' इन दो पुस्तिकाओं का विमोचन हुआ। गुरुदेव ने इस संदर्भ में मंगल प्रेरणा प्रदान की।

बोलती किताब

बिन पानी सब सून

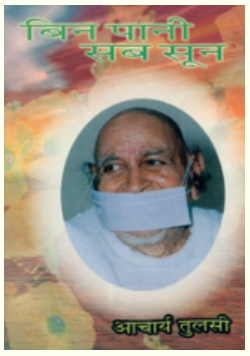

पानी को जीवन इसलिए कहा जाता है, क्योंकि सृष्टि का प्रत्येक जीवित तंतु इसी तत्व पर निर्भर है और इसकी अनुपस्थिति में समूचा जीवन अस्त-व्यस्त और सूना हो जाता है। खेतों की हरियाली, फसलों की उर्वरता, भोजन का निर्माण, उद्योगों की गतिविधियाँ तथा निर्माण-कार्य सभी जल की उपलब्धता पर आधारित हैं। जिस भूमि पर पानी नहीं पहुँचता, वहाँ हरियाली का वैभव मुरझा जाता है और पेड़-पौधे सूखकर जीवनहीन दिखाई देने लगते हैं। लोकनायक रहीम का मन्तव्य—"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून"—आज के पर्यावरणीय संकट में और अधिक सार्थक प्रतीत होता है।

भारतीय भाषिक परंपरा में पानी केवल पीने योग्य द्रव्य नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा, आभा, पहचान, स्वाभिमान, और जीवन-ऊर्जा का रूपक भी है, जिसकी उपस्थिति से किसी चीज़ का मूल्य और सम्मान बना रहता है। मोती का पानी उतर जाए तो उसका सौंदर्य मिट जाता है, और मनुष्य का पानी अर्थात् उसकी मान-प्रतिष्ठा चली जाए तो जीवन का अर्थ खो जाता है। इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में मानवता जिस गम्भीर जल-विपदा से जूझ रही है, वह पानी के अनियंत्रित दोहन, प्रदूषण और जलस्रोतों के क्षरण का दुष्परिणाम है। वर्षा का असंतुलन, भूजल का तीव्र दोहन और जल संचयन की उपेक्षा इस संकट को दिन-प्रतिदिन बढ़ा रही है; अतः बूंद-बूंद बचाने की चेतावनी अब केवल नारा नहीं रह गई, बल्कि भविष्य की सुरक्षा का आग्रह बन चुकी है।

मनुष्य का वास्तविक पानी उसके चरित्र, आचरण और सद्गुणों में निहित है, जो उसकी प्रतिष्ठा, साख और स्वाभिमान को दृढ़ता प्रदान करते हैं तथा समाज में उसकी अस्मिता को सुरक्षित रखते हैं। व्यक्ति अपने विचार, व्यवहार, शिष्टाचार और सदाचार के माध्यम से अपनी नैतिक पहचान निर्मित करता है, और इसी पहचान से उसकी विश्वसनीयता और मानवीय मूल्य निर्धारित होते हैं। राष्ट्र का चरित्र भी उसके नागरिकों के चरित्र का व्यापक रूप है, और यही किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी संपदा और शक्ति है। इसी संदर्भ में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही चरित्र-निर्माण, नैतिक जागरण और मानवीय मूल्य-प्रत्यावर्तन के उद्देश्य से व्यापक अभियान प्रारम्भ किया, जिसका मूल विश्वास था कि व्यक्ति सुधरेगा तो राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के मूल्यों तथा जीवन-दर्शन को प्रवचन, साहित्य, गीत-संगीत और व्यवहार-मार्गदर्शन के माध्यम से सरल, सुबोध और जन-सुलभ रूप प्रदान किया, जिसने लाखों लोगों को विचार और आचार की नई दिशा दी। अणुव्रत आचार-संहिता, प्रश्नोत्तर शैली में संकलित व्याख्याएँ तथा समसामयिक समस्याओं पर उनकी लेखनी इस आंदोलन के वैचारिक आयाम को सुदृढ़ करती हैं और पाठकों का मार्गदर्शन करती हैं। 'बिन पानी सब सून' शीर्षक पुस्तक जल-संकट और मानवीय चरित्र—दोनों की सुरक्षा और संवर्धन का संदेश देती है, तथा पाठकों को प्रेरित करती है कि वे अपने पानी अर्थात् प्रतिष्ठा, साख और स्वाभिमान की रक्षा हेतु अणुव्रत रूपी नैतिक कवच धारण करें। यही इस स्वाध्याय की सार्थकता और मानवीय विकास की अनिवार्य शर्त है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 फरवरी - 22 फरवरी 2026

मनुष्य जन्म का मिलना है दुर्लभ और महत्वपूर्ण बात : आचार्यश्री महाश्रमण

सिंघाना मण्डल द्वारा विराट हिन्दू सम्मेलन का आयोजन

सिंघाना गांव ।
03 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी आज मंगलवार प्रातः अपनी धवल सेना के साथ गतिमान हुए और लगभग 12 किमी का विहार कर सिंघाना गांव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। विद्यालय परिसर में विद्यालय परिवार ने पूज्य प्रवर का भावभीना स्वागत किया। आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के साथ ही पूज्य प्रवर की सन्निधि में सिंघाना मण्डल द्वारा विराट हिन्दू सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित जनता को पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में चार चीजें दुर्लभ बताई गई हैं - मनुष्य जन्म का मिलना, उच्च कुल में जन्म, धर्म का श्रवण, व धर्म में श्रद्धा और संयम में पराक्रम। मनुष्य जन्म यदि मिल जाए तो जीवन कैसे जीया जाए यह महत्त्वपूर्ण बात है। व्यक्ति को अच्छे लक्ष्य के साथ जीवन जीना चाहिए। मनुष्य एक चिंतनशील और विवेकशील प्राणी है। शास्त्र में कहा गया कि पूर्व कर्मों का नाश करने के लिए इस देह का धारण करना चाहिए।

मनुष्य जीवन को यदि वृक्ष मान लिया जाए तो छः फल मनुष्य जीवन रूपी वृक्ष के लगने चाहिए। उसमें पहला बताया गया है - जिनेश्वर भगवान की भक्ति करें, नाम स्मरण करें। दूसरा है - गुरु की पर्युपासना करें। तीसरा फल - सभी प्राणियों के प्रति करूणा का भाव रखना। अपनी ओर से किसी को कष्ट देने का व्यर्थ प्रयास न करें। चौथा फल है - सुपात्र दान देना। पांचवां फल है - गुणों के प्रति अनुराग, और छठा फल - आगम वाणी का श्रवण व स्वाध्याय। इस प्रकार यदि मनुष्य जीवन रूपी वृक्ष पर ये फल लगते हैं तो उसका जीवन सफल हो सकता है।

आचार्यश्री ने कहा कि सभी में सद्भावना हो, जीवन में नैतिकता रहे और जीवन नशामुक्त रहे। आचार्य प्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों व जनता को सद्भावन, नैतिकता, व नशामुक्ति की प्रेरणा दी तथा विद्यार्थियों व उपस्थित लोगों को संकल्पों का स्वीकरण करवाया।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत संचालक हरदयाल ने उपस्थित जनता को संबोधित किया। मंगल प्रवचन के पश्चात् विद्यालय के प्रधानाचार्य छोटूराम भाकर ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

ज्ञान के साथ ध्यान रूपी आचार का प्रयोग रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
07 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का योगक्षेम वर्ष हेतु जैन विश्व भारती परिसर में बने 'महाश्रमण विहार' में विराजमान हो गए हैं।

आज भी सुधर्मासभा में लाडनूं की ओर से नागरिक अभिनंदन का क्रम चला। इस क्रम में तेरापंथी सभा-लाडनूं के अध्यक्ष प्रकाशचंद बैद, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष सुमित मोदी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। लाडनूं ज्ञानाशाला के ज्ञानार्थियों की प्रस्तुति हुई स्थानीय तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित जनता को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्मा की शुद्धि अध्यात्म साधना का लक्ष्य होता है। वह शुद्धि धर्म की साधना के द्वारा हो सकती है। अध्यात्म की साधना के अनेक आयाम हैं जैसे अहिंसा की आराधना, संयम की साधना और तप का आसेवन। ये आत्म शुद्धि के उपाय हैं और इन सब चीजों का ज्ञान भी होना चाहिए। स्वाध्याय के द्वारा व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। पहले ज्ञान और फिर उस के अनुरूप आचरण। स्वाध्याय के द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है और स्वाध्याय के साथ ध्यान का भी महत्व है। व्यक्ति की एकाग्रता और चित्त की निर्मलता कितनी है, यह महत्वपूर्ण बात है और ध्यान के द्वारा इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। ध्यान दो प्रकार से किया जा सकता है। एक तो व्यक्ति समय निकालकर, सब काम छोड़कर एक दो घंटा स्थिर होकर ध्यान करे। यह भी एक साधना का प्रयोग है। शरीर की स्थिरता जितनी सघन होती है वह मन की एकाग्रता में भी सहायक बन सकती है। अतः कायोत्सर्ग-शरीर की स्थिरता ध्यान साधना में सहायक बन सकते हैं। हम जैन विश्व भारती में स्थित हैं, जो एक ध्यान का भी केन्द्र है। यहां प्रेक्षा-ध्यान के नाम से ध्यान पद्धति चलती है। ध्यान की अनेक पद्धतियों है और सबके अलग-अलग सिद्धान्त और पद्धतियों हो सकती है। परन्तु ध्यान का सार है स्थिरता और निर्मलता। मनो योग, वचन योग और काय योग, इन तीनों योगों को अयोग की ओर ले जाना। योग निरोध होने से अयोग की साधना को प्राप्त होती है। जैन तत्त्व विद्या के अनुसार सम्पूर्ण अयोग को स्थिति चौदहवें गुणस्थान में प्राप्त होती है। हम योग साधना भी कह सकते हैं और अयोग साधना भी कह सकते हैं। दोनों का लक्ष्य एक हो। आचार्य हेमचंद्र ने कहा कि मोक्ष का जो उपाय है वह सब योग है। जो हमारी आत्मा को मोक्ष से जोड़ती है वह सब योग है। जैन तत्त्व विद्या के अनुसार शरीर, वाणी, और मन की प्रवृत्ति योग है। जब तक यह प्रवृत्ति रहेगी, मोक्ष प्राप्त नहीं होगा। प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर जाना अयोग की ओर बढ़ना होता है। जब शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति का पूर्णतः निरोध हो जाता है अर्थात अप्रमत अवस्था आ जाती तो वह अयोग की स्थिति होती है। ध्यान प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में होना चाहिए। 'ध्यान' शब्द मानव जीवन के व्यवहार में बहुलता से प्रयुक्त होता है। व्यक्ति जो भी कार्य करे उसमें भाव क्रिया होनी चाहिए अर्थात जो कार्य करे उसमें पूर्णतः एकाग्रता रहे।

आचार्य प्रवर ने कहा कि अभी हम जैन विश्व भारती में हैं। यहां इतने साधु-साध्वियो, समणियां, मुमुक्षु बाइयां रहती हैं। लाडनूं परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी की जन्म भूमि, दीक्षा भूमि और कर्मभूमि भी है। यहां आचार्यश्री तुलसी ने लगातार दो-दो चातुर्मास किए हैं।

गुरुदेव तुलसी जैन विश्व भारती परिसर में कितना-कितना भ्रमण किया करते थे। कल भी स्वागत का क्रम चला और वह आज भी चला है। लाडनूं को यदि पुरुष मान लें तो 'जैन विश्व भारती' उसका आभूषण है। ऐसी जैन विश्व भारती संस्था में हमारा लम्बे प्रवास के प्रयोजन में आना हुआ है। जीवन में धार्मिक-आध्यात्मिक रूप में पर-स्वकल्याण का प्रयास करते रहें। मुनि जयकुमारजी ने अपनी हर्षाभिव्यक्ति देते हुए आचार्यश्री के हरिद्वार और ऋषिकेश पधारने की प्रार्थना की तो करुणावतार ने भगवान महावीर, आचार्यश्री भिक्षुस्वामी, परम पूज्य गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का स्मरण करते हुए कहा कि सन् 2028 के मर्यादा-महोत्सव के बाद यथासंभव तथा अनुकूलता के अनुसार हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, मसूरी, यमुनानगर व जगाधरी जाने का भाव है। आचार्य प्रवर की इस घोषणा के साथ ही पूरा प्रवचन पांडाल जयघोष से गूंज उठा। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। जैन विश्व भारती के ट्रस्टी राजेश दूगड ने अपनी अभिव्यक्ति दी। मुस्लिम समाज की ओर से लाडनूं शहर काजी ने अभिव्यक्ति देते हुए मुस्लिम समाज की ओर से अभिनंदन पत्र अर्पित किया। सर्व ब्राह्मण समाज, रावणा राजपूत समाज, जांगीड़ समाज, सैन समाज, रेगर समाज, भारत विकास परिषद, दिगम्बर जैन समाज, माली समाज, माहेश्वरी समाज, ओसवाल पंचायत, गणगौर मेला समिति, रामानंद गौशाला, स्वर्णकार समाज, विद्या भारती आदि अनेक संस्थाओं से संबद्ध व्यक्तियों ने श्रद्धाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा आरती कठौतिया, युवक परिषद की ओर से जवेरीमल दूगड़, अणुव्रत समिति की ओर से शांतिलाल बैद ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तत्पश्चात् लाडनूं के समस्त समाज की ओर से पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र अर्पित किया गया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

चिन्तन-मंथन

आचार्य भिक्षु तार्किक-शक्ति से सम्पन्न थे। उन्होंने साध्य-साधन का विवेचन केवल आगमों के आधार पर ही नहीं किया है, स्थान-स्थान पर उसे तर्क से भी पुष्ट किया। धर्म को कसौटी पर कसते हुए उन्होंने बताया– धर्म मुक्ति का साधन है। मुक्ति का साधन मुक्ति ही हो सकती है, बंधन कभी उसका साधन नहीं होता। बंधन भी यदि मुक्ति का साधन हो जाए तो बंधन और मुक्ति में कोई भेद ही न रहे। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के सिवाय कोई मुक्ति का उपाय ही नहीं है। इसलिए ये चार ही धर्म हैं! शेष सब बन्धन के हेतु हैं। जो बंधन के हेतु हैं, वे मोक्ष धर्म नहीं हैं। धर्म मुक्ति का साधन है और स्वयं मुक्ति है। इसलिए कहा जा सकता है कि मुक्ति-मुक्ति के द्वारा ही प्राप्य हैं, बंधन के द्वारा बंधन होता है। उसके द्वारा मुक्ति प्राप्य नहीं है। बंधन अनादि परिचित है और मुक्ति अपरिचित है। इसलिए संसारी जीव बंधन की प्रशंसा करते हैं। किंतु मुमुक्षु प्राणी उसकी सराहना नहीं करते।

मोक्ष है– सूक्ष्म शरीर से मुक्ति। उसके बिना स्थूल शरीर नहीं होता। उसके अभाव में इन्द्रियां और मन नहीं होते। इनके बिना विषय नहीं होता। विषय के अभाव में राग-द्वेष नहीं होते। राग-द्वेष के बिना कर्म का बंध नहीं होता। बन्धन के बिना संसार नहीं होता, जन्म-मरण की आवृत्ति नहीं होती। मोक्ष से संसार नहीं होता और संसार से मोक्ष नहीं होता, इसलिए मोक्षार्थी व्यक्ति को न जन्म की इच्छा करनी चाहिए और न मृत्यु की। उसके लिए अभिलषणीय है– संयम। संयम से जीवन-मृत्यु की आवृत्ति का निरोध होता है इसलिए वह मोक्ष का उपाय है, मोक्ष है।

जिन्हें सब प्रकार से हिंसा करने का त्याग नहीं है, वे असंयमी हैं। संयमी वे हैं, जिनका जीवन हिंसा से पूर्णतः विरत है। लोकदृष्टि में वह जीवन श्रेष्ठ है, जो समाज के लिए उपयोगी है। मोक्षदृष्टि में वह जीवन श्रेष्ठ है, जो संयमी है। असंयमी जीवन की इच्छा समाज की उपयोगिता हो सकती है, धर्म नहीं। आचार्य भिक्षु ने कहा– अपने असंयमी जीवन की इच्छा करना भी पाप है तब दूसरे के असंयमी जीवन की इच्छा करना धर्म कैसे होगा? मरने-जीने की इच्छा अज्ञानी करता है। ज्ञानी वह है, जो समभाव रखे।

धर्म का संबंध जीवन या मृत्यु से नहीं है। उसका संबंध संयम से है। एक व्यक्ति स्वयं मरने से बचा, दूसरे ने उसके जीवित रहने में सहयोग दिया और तीसरा उसके जीवित रहने से हर्षित हुआ। इन तीनों में धर्मी कौन-सा होगा? जो जीवित रहा, उसका भी अव्रत नहीं घटा, सहयोग करने वाले और हर्षित होने वाले का भी व्रत नहीं बढ़ा, फिर ये धर्मी कैसे होंगे? जीना, जिलाना और जीने का अनुमोदन करना– ये तीनों समान हैं।

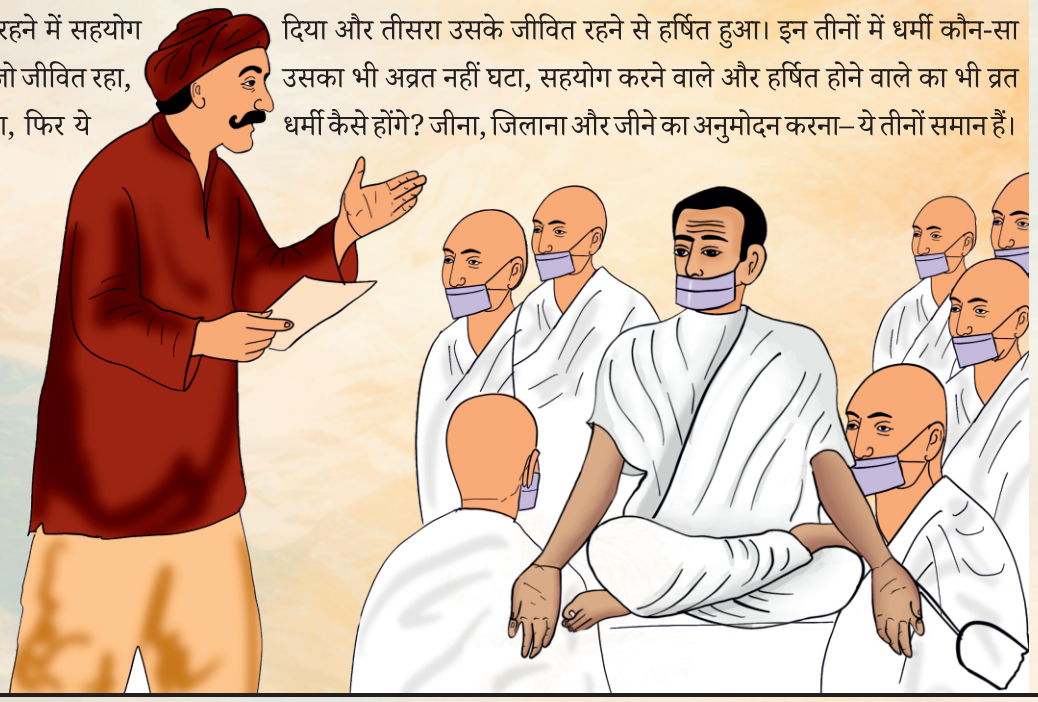

भिक्षु की कहानी : जयाचार्य की जुबानी

हल्कापन ऊपर लाता है

बोरा खिंवेसरा ने एक और प्रश्न पूछा– जीव देवलोक में जाता है, उसे ऊपर कौन ले जाता है?

तब स्वामीजी बोले– काठ को पानी के अंदर डालने पर वह ऊपर आ जाता है। उसे कोई ऊपर नहीं लाता। पर वह अपने हल्केपन के कारण ऊपर आकर तैरने लग जाता है। इसी प्रकार जीव भी कर्मों से हल्का होने पर अपने आप ऊपर देवगति में चला जाता है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

रात्रि भोजन धार्मिक-वैज्ञानिक पक्ष

जैन दर्शन त्याग प्रधान दर्शन है। इसकी हर बात, हर रीति के पीछे सिर्फ धार्मिक पक्ष ही नही, वैज्ञानिक, पक्ष भी है। धर्म ये कहता है कि सूर्यास्त के बाद नहीं खाना चाहिए। विज्ञान कहता है कि हमारा पाचन प्रणाली सूर्य ताप से संचालित होता है। धर्म ये कहता है कि गरिष्ठ भोजन ज्यादा नहीं करना चाहिए, विज्ञान ये कहता है कि अति वसा युक्त पदार्थ नहीं करना चाहिए धर्म ये कहता है कि विगय की अतिमात्रा का परिहार होना चाहिए विज्ञान ये कहता है कि High Calorie Food से बचना चाहिए। दरअसल सूर्य छिपने के बाद हमारा पाचन तंत्र भी सुस्त होने लग जाता है तथा रोगाणु भी सक्रिय होने लग जाते हैं। इससे अनेकानेक रोगों की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए हम देखते हैं कि अधिकांश बीमारियां हमें रात्रि को ही परेशान करती है और सबसे महत्वपूर्ण बात धर्म और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि हम कोरा धर्म समझेंगे तो अधुरापन रह जाएगा और यदि धर्म को विज्ञान के साथ ही समझने का प्रयत्न करेंगे तो उठते ही हम सुलझे हुए इंसान बनेंगे। रात्रि भोजन ना करना केवल धार्मिक दृष्टि से वर्जित, वैज्ञानिक दृष्टि से भी सिद्ध होता है।

क्या आप जानते हैं?

चूने आदि से अचित्त किए हुए पानी में सचित्त पानी से गिली गिलास चली जाए तो बारह मिनट बाद उसे अचित्त माना जाए। कुछ पानी मिल जाने पर उसमें पुनः चूना आदि डाले बिना अचित्त नहीं माना जाए तथा गर्म पानी में सचित्त पानी से गिली गिलास या थोड़ा भी सचित्त पानी मिल जाए तो उस पानी को सचित्त माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

।। ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः की एक माला फेरे ।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 फरवरी - 22 फरवरी 2026

आत्मशुद्धि का साधन है सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

चंदेरी नगरी लाडनूं में पूज्यप्रवर का धवल सेना संग हुआ पदार्पण

लाडनूं।
05 फरवरी, 2026

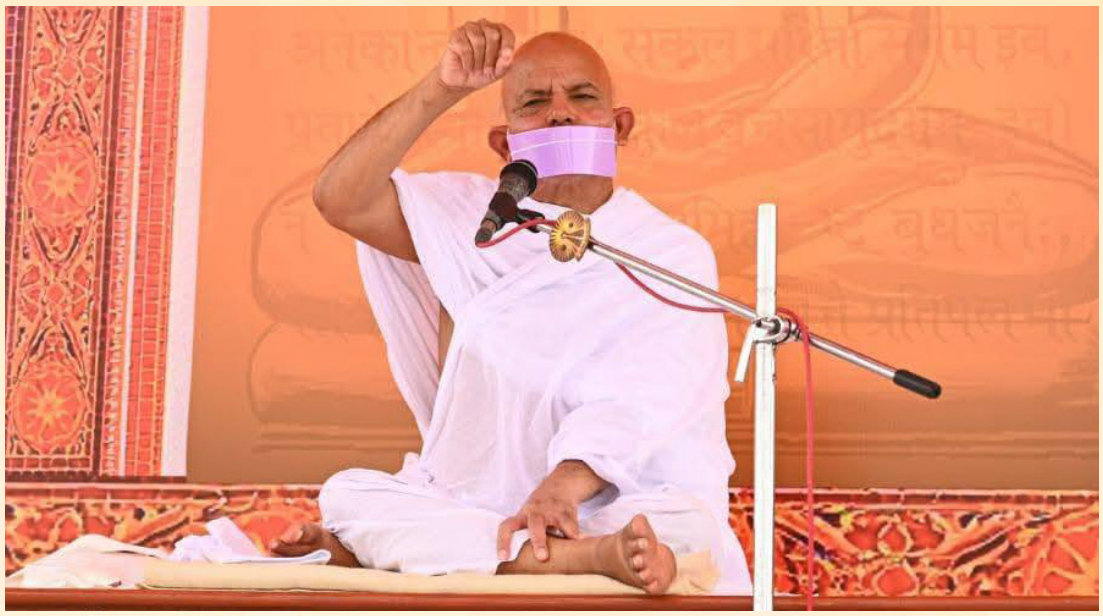

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का गुरुवार को तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी 'लाडनूं' में मंगल पदार्पण हुआ तो अपने आराध्य के चरणों का स्पर्श पाकर लाडनूं नगरी आलोकित हो गई। हर वर्ग, समुदाय, समाज के लोगों ने समूह बद्ध रूप में खड़े होकर पूज्य प्रवर की अगवानी की। शांति दूत अपने करकमलों से सबको आशीष देते हुए और मंगल पाठ सुनाते हुए लाडनूं नगर के भीतर गतिमान हुए। सबकी भावनाओं को पूर्ण करते हुए गुरुदेव को लगभग डेढ़ किमी के विहार में ही कई घंटे लग गए। विशाल जुलूस के साथ सभी का अभिनंदन स्वीकार करते हुए एक दिवसीय प्रवास हेतु भागचंद बरड़िया के निवास स्थान 'भाग्यश्री' में पधारे। इस अवसर पर समुपस्थित श्रद्धालुओं को अमृतदेशना प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि धर्म एक ऐसा तत्त्व है, जो परम मंगल होता है। धर्म का एक अर्थ है - आत्मशुद्धि का साधन। जिस उपाय से आत्मा निर्मलता को प्राप्त हो, वह उपाय धर्म होता है। कर्त्तव्य को भी धर्म के रूप में देखा जा सकता है, परन्तु अध्यात्म के संदर्भ में आत्मा की शुद्धि का साधन धर्म होता है।

अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है, तप धर्म है। हम आम जनता को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति ये तीन बातें बताते हैं। सद्भावना अर्थात जाति, संप्रदाय आदि को लेकर दंगा-फसाद, मार-काट, हिंसा-हत्या आदि में नहीं जाना। सबके प्रति मैत्रीभाव रखना। अपनी ओर से किसी को भी अकारण तकलीफ नहीं दूं, सबके प्रति मंगल भावना रखूं। इन तीन बातों को बताते हैं और लोगों को संकल्प भी करवाते हैं। सभी प्राणियों के प्रति सद्भावना हो और उनके कल्याण की भावना हो तो आत्मा निर्मल हो सकती है। इसी प्रकार नैतिकता भी जीवन में हो तो जीवन अच्छा बन सकता है। व्यक्ति झूठ, कपट और चोरी से बचे तो मानना चाहिए कि उसके जीवन में ईमानदारी है। ईमानदारी ऐसी चीज है कि किसी भी धर्म को मानने वाला हो, अथवा नास्तिक भी क्यों न हो! सबके लिए कल्याणकारी है। ईमानदारी, अहिंसा और संयम ऐसे तत्व हैं जो मानवता के लिए हितकर हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत की बात बताई। व्यक्ति जहा भी जाए अणुव्रत को साथ रखने का प्रयास करना चाहिए। ईमानदारी का संकल्प व्यक्ति के जीवन में रहना चाहिए। ईमानदारी को सर्वोत्तम नीति कहा गया है। ईमानदारी की राह में परेशानी आ सकती है परन्तु यदि मनोबल मजबूत हो तो अंतिम विजय ईमानदारी की ही होती है। अतः हम सभी को अपने जीवन में ईमानदारी की आधारना करने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति को जीवन में झूठ, कपट व मिथ्या आरोपों से बचने का प्रयास करना चाहिए। अहिंसा अर्थात प्राणी मात्र के प्रति मैत्री की भावना होनी चाहिए। जीवन में संयम रहे, विचारों में उच्चता और व्यवहार में सादगी रहे तो जीवन अच्छा जी सकता है।

आचार्य श्री ने कहा कि आज हमारा लाडनूं में आना हुआ है परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की जन्म स्थली, दीक्षा स्थली, उनके लम्बे प्रवास की भूमि, सप्तम आचार्य श्री डालगणी के प्रयाण की भूमि पर आज हमारा आना हुआ है। कल जैन विश्व भारती में प्रवेश होना है। बरड़ियाजी के यहां आना हो गया है। यहां की जनता में खूब अच्छी भावना रहे। कार्यक्रम में बालिका पृशा बालड़ ने अपनी प्रस्तुति दी। बरड़िया परिवार ने गीत का संगान किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत